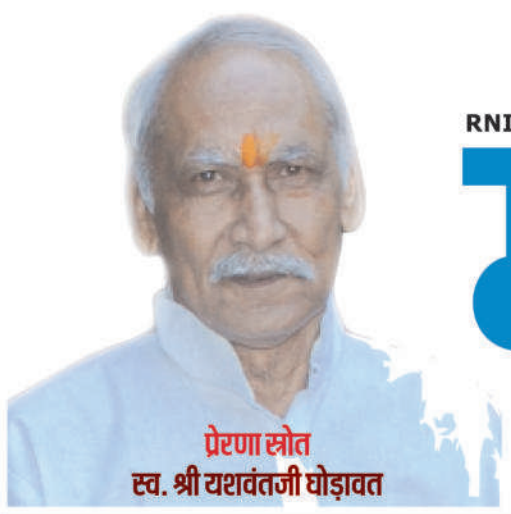
प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यशवंतजी घोड़ावत

RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ...सच

माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

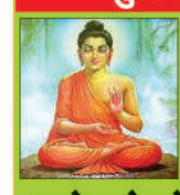

अच्छे शब्दों के प्रयोग से बुरे लोगों का भी दिल जीता जा सकता है।
भगवान बुद्ध

वर्ष-05, अंक - 24 (साप्ताहिक) खवासा, गुरुवार 16 मार्च 2023 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

सीधे संघ और भाजपा कार्यकर्ताओं को बना दिया पंचायत एवं ग्रामीण विकास में पेसा कानून जिला समन्वयक

मध्यप्रदेश में फिर ठगा गया बेरोजगार

89 पदों के लिए आया विज्ञापन, 890 अभ्यर्थियों की बनी सूची, प्रक्रिया निरस्त कर अपनों को दे दी नौकरी

माही की गूंज, मंदसौर।
साहिल अगवान

मध्यप्रदेश में पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग ने 20 पेसा कानून जिला समन्वयकों और 89 ब्लॉक समन्वयकों की भर्ती की है, जो सवालों के घेरे में है। कहानी ऐसी है कि, सरकार ने पहले तो भर्ती का विज्ञापन जारी किया। मेरिट के आधार पर 890 अभ्यर्थियों की सूची बनाई। बाद में वक्त कम होने की बात कहकर प्रक्रिया ही निरस्त कर दी और कथित तौर पर भाजपा और उससे जुड़े संगठनों के कार्यकर्ताओं को नौकरी पर रख लिया। यह पूरी प्रक्रिया सवालों के घेरे में आ गई है।

दरअसल, मामला ऐसा है कि पंचायत राज संचालनालय ने अनुसूचित जाति की बहुलता वाले जिलों एवं ब्लॉक में पेसा कोऑर्डिनेटर भर्ती के लिए 2021 में विज्ञापन दिया था। इसे सेडमैप ने जारी किया था। प्रक्रिया पूरी होने के बाद मेरिट लिस्ट में 890 अभ्यर्थियों की सूची बनाई गई। जनवरी 2022 में इन 890 अभ्यर्थियों को साक्षात्कार के लिए आमंत्रित किया गया। 09 से 11 फरवरी तक साक्षात्कार होने थे। इसके एक दिन पहले यानी 08 फरवरी को पूरी प्रक्रिया ही बिना किसी कारण निरस्त कर दी। किसी तरह की जानकारी भी नहीं दी गई। जब सोशल मीडिया पर अभ्यर्थियों को ब्लॉक और डिस्ट्रिक्ट कोऑर्डिनेटर का प्रशिक्षण दिए जाने की बात सामने आई तो अभ्यर्थियों को भर्तियों की जानकारी लगी। अब प्रक्रिया में शामिल अभ्यर्थी खुद को ठगा-सा महसूस कर रहे हैं।

ऐसे हुआ गड़बड़झाला

पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग को 89 ब्लॉक्स में समन्वयक भर्ती करने थे। पेसा कानून इन्हीं ब्लॉक्स में लागू हुआ है। सेडमैप से पदों की भर्ती के लिए विज्ञापन निकाला गया। जब अभ्यर्थियों की सूची बन जई तो साक्षात्कार से एक दिन पहले पूरी प्रक्रिया ही निरस्त कर दी गई। एमपीकॉन को 20 जिलों में जिला समन्वयक और 89 ब्लॉक समन्वयक भर्ती करने को कहा जया।

पंचायत राज संचालनालय के संचालक अमरपाल सिंह का कहना है कि, समय कम था इस वजह से एमपीकॉन से आउटसोर्स भर्ती की है।

जब एमपीकॉन से बात की गई तो एमडी के मीटिंग में होने की बात कहकर बताया गया कि, आठत्सोर्स का काम दूसरी एजेंसियों से किया जाता है। एजेंसी का नाम बताए तो कहा कि, सुनील मार्कंडेय नामक शख्स की सेवाएं ली गई हैं। सुनील मार्कंडेय को फोन लगाया तो उन्होंने अखबार का नाम सुनते ही फोन काट दिया।

जयस और कांग्रेस बनाएंगे इसे मुद्दा

ब्लॉक समन्वयकों की भर्ती का मुद्दा अब कांग्रेस और जय आदिवासी युवा शक्ति संगठन उठा रहे हैं। जयस के नेता और व्यापम मामले में व्हिसलब्लोअर आनंद राय का कहना है कि, बिना विज्ञापन के सीधे संघ और भाजपा कार्यकर्ताओं को भर्ती कर लिया गया है। यह सीधे-सीधे घोटाला है। एक भी महिला को भर्ती नहीं किया गया है। अभ्यर्थी ईओडब्ल्यू से शिकायत कर रहे हैं। उन्हें हाईकोर्ट जाने के लिए हर संभव सहायता उपलब्ध कराई जाएगी।

वहीं, कांग्रेस विधायक हीरालाल अलावा का कहना है कि, यह भर्ती असंवैधानिक है। बिना विज्ञापन के सीधे भाजपा और संघ कार्यकर्ताओं को रख लिया है। हम राज्यपाल को ज्ञापन देकर गड़बड़ी की जांच कराने की मांग करेंगे। इसे लेकर प्रदेश स्तर पर आंदोलन भी करेंगे।

पंचायत राज संचालनालय के संचालक अमरपाल सिंह से चर्चा

सवाल- सेडमैप की भर्ती को निरस्त कर एमपीकॉन से भर्ती में गड़बड़ी पर सवाल उड़े हो रहे हैं?
अमरपाल सिंह- भर्ती लंबे समय से चल रही थी। हमें काम जल्दी शुरू करना था। इस वजह से एमपीकॉन से आउत्सोर्स से नियुक्ति की गई।

सवाल- यह भर्ती कब तक रहेगी? क्या आगे इसे बढ़ाया जा सकेजा?
अमरपाल सिंह- एक साल के लिए भर्ती की जई है। यदि जरूरत हुई तो आगे बढ़ा भी सकते हैं।

सवाल- संघ और भाजपा कार्यकर्ताओं को भर्ती करने के आशेप लग रहे हैं?
अमरपाल सिंह- हमनें एमपीकॉन से आउस्सोर्स पर भर्ती की है।

एच3 एन2 इन्फ्लूएंजा का प्रकोप

पुडुचेरी, एजेंसी।
कोरोना महामारी के बाद अब एच3एन2 वायरस का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। देश के कई राज्यों में इसके मामले लगातार बढ़ रहे हैं। इसी को देखते हुए पुडुचेरी में सभी स्कूलों को बंद करने का फैसला किया गया है। 16 से 26 मार्च तक सभी स्कूल बंद रहेंगे। पुडुचेरी के शिक्षा मंत्री ए नमस्सिवम ने इसकी जानकारी दी है।

पुडुचेरी में एच3एन2 वायरस के मामले बढ़ते जा रहे है। केंद्र शासित प्रदेश के स्वास्थ्य विभाग ने 11 मार्च को कहा था कि पुडुचेरी में 4 मार्च तक वायरल एच3एन2 वायरस से संबंधित 79 वायरस के मामले सामने आए हैं। राहत की बात ये है कि केंद्र शासित प्रदेश में अब तक एच3एन2 से संबंधित किसी भी मौत की सूचना नहीं मिली है।

इन चार क्षेत्रों के स्कूल हुए बंद

बच्चों में इन्फ्लुएंजा के वायरल के प्रसार को देखते हुए पुडुचेरी, कराईकल, माहे और यनम के सभी चार क्षेत्रों के स्कूलों को बंद करने के आदेश दिए गए है। शून्य काल के दौरान विधानसभा में बोलते हुए, गृह और शिक्षा मंत्री ए नम्मासिवयम ने कहा कि विशेष रूप से बच्चों में इन्फ्लूएंजा के प्रसार को देखते हुए, सरकार ने निजी तौर पर प्रबंधित संस्थानों और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों सहित प्राथमिक कक्षा से कक्षा 8 तक के सभी स्कूलों के लिए अवकाश घोषित करने का निर्णय लिया है।

क्या है एच3एन2...?

यूएस सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन (सीडीसी) के मुताबिक, एच3एन2 एक इन्फ्लूएंजा वायरस है जो आमतौर पर सूअरों में फैलता है और इंसान इससे संक्रमित होते है। इसके लक्षण आम फ्लू जैसे ही होते हैं। बुखार, खांसी, नाक बहना, शरीर में दर्द होना, उल्टी और दस्त इसके मुख्य लक्षण है।

विधानसभा अध्यक्ष पर सदन में पक्षपात करने का लगा आरोप

तिरुवनंतपुरम, एजेंसी।
केरल विधानसभा परिसर में बुधवार को भारी विरोध देखा गया। विपक्षी यूडीएफ विधायकों के एक वर्ग ने अध्यक्ष एएन शमसीर के कार्यालय तक मार्च निकाला। विधायकों ने राज्य विधानसभा अध्यक्ष के खिलाफ सदन में पक्षपात करने का आरोप लगाते हुए वहां धरना दिया।

विपक्ष ने किया वाकआउट

यह पूरा विरोध उस दौरान शुरू हुआ, जिस वक्त महिला सुरक्षा पर स्थगन प्रस्ताव के उनके नोटिस को सदन में खारिज किया गया, जिसके तुरंत बाद, विपक्ष ने सदन से वाकआउट किया। साथ ही वे अध्यक्ष शमसीर के कार्यालय तक नारेबाजी करते हुए और हाथों में एक बैनर लेकर कहा कि, अध्यक्ष को न्याय दिखाना चाहिए।

विपक्षी को बलपूर्वक हटाने की कोशिश

विपक्षी विधायकों के विरोध प्रदर्शन के बाद कुछ समय के लिए परिसर में तनाव व्याप्त हो गया। वॉच एंड वार्ड के कर्मचारियों ने विपक्षी विधायकों को स्पीकर के कार्यालय के परिसर से बलपूर्वक हटाने की कोशिश की और बाद में इसका कड़ा विरोध किया।

क्या है वॉच एंड वार्ड स्टाफ

वॉच एंड वार्ड स्टाफ, जिसे हाउस मार्शल के रूप में भी जाना जाता है। ये राज्य विधानमंडल की सुरक्षा की देखरेख करते हैं और विधानमंडल के अध्यक्ष और सचिव के नियंत्रण में काम करते हैं।

चिकित्सा कक्ष में किया स्थानांतरित

जब विधायकों और सुरक्षाकर्मियों के बीच गरमागरम बहस और हाथापाई हुई, चालकुडी विधायक टी जे सनेश कुमार जोसेफ ने कुछ बेचैनी महसूस की, जिसके बाद उन्हें जल्द ही चिकित्सा कक्ष में स्थानांतरित कर दिया गया।

वहीं कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूडीएफ ने आरोप लगाया कि, वॉच एंड वार्ड कर्मियों के अलावा, कुछ सत्ताधारी विधायकों और कुछ मंत्रियों के कर्मियों ने उनके साथ मारपीट की। उन्होंने कहा कि वरिष्ठ विधायक और पूर्व गृह मंत्री तिरुवनचूर राधाकृष्णन को धक्का दिया गया और चार-पांच महिला मार्शलों ने विधायक के के रेमा का हाथ मरोड़ा और जमीन पर घसीटा।

एशिया के शीर्ष 15 प्रदूषित शहरों में भारत के 12 शहर

नई दिल्ली, एजेंसी।
स्विस फर्म आईक्यूएयर की रिपोर्ट के मुताबिक 2022 में मध्य और दक्षिण एशिया के 15 सबसे प्रदूषित शहरों में से 12 भारत में थे, जिसमें भिवाड़ी देश का सबसे प्रदूषित शहर था। स्विस फर्म आईक्यूएयर की रिपोर्ट के मुताबिक 2022 में भारत का सालाना औसत पीएम 2.5 का स्तर 53.3 माइक्रोग्राम/एम3 था, जो 2021 के औसत 58.1 से थोड़ा कम है।

भारत में भिवाड़ी 92.7 माइक्रोग्राम/एम3 के वार्षिक पीएम 2.5 स्तर पर देश का सबसे प्रदूषित शहर है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि इस रिपोर्ट में शामिल भारत के लगभग 60 प्रतिशत शहरों में वार्षिक पीएम 2.5 का स्तर डब्लूएचओ के दिशानिर्देश से कम से कम सात गुना अधिक है। पीएम 2.5 में परिवहन क्षेत्र का योगदान भारतीय शहरों में 20 से 35 प्रतिशत तक भिन्न होता है।

वायु गुणवत्ता की निगरानी में वृद्धि

रिपोर्ट में कहा गया है कि, पराली (फसल अवशेषों) को जलाना भी इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण चुनौती है, लेकिन यह दिल्ली सहित कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित घटना है। 2022 में, भारत ने कोयला खदानों के लिए पर्यावरण अनुपालन नियमों में ढील दी, जिससे अत्यधिक गर्मी की वजह से बिजली कटौती के जवाब में उत्पादन में वृद्धि हुई।

नवंबर में स्टीम कोल/थर्मल कोयले का आयात 10 महीने के निचले स्तर पर पहुंच गया और कुल कोयले का उत्पादन 11.7 प्रतिशत बढ़कर 75.9 मिलियन टन हो गया।

रिपोर्ट में कहा गया है कि, भारत में पिछले वर्षों में वायु गुणवत्ता की निगरानी में वृद्धि हुई है, लेकिन देश में अभी भी एक प्रभावी और विश्वसनीय उत्सर्जन सूची के माध्यम से कमी की रणनीतियों की प्रगति को ट्रैक करने की क्षमता का अभाव है।

राष्ट्रीय उत्सर्जन डेटाबेस को व्यापक करना आवश्यक

रिपोर्ट में कहा गया है कि, राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (एनसीएपी) में उल्लिखित 2026 तक पार्टिकुलेट सांद्रता में लक्षित 40 प्रतिशत की कमी को पूरा करने के लिए आवश्यक क्षेत्रीय उत्सर्जन में कटौती का निर्धारण करने के लिए एक व्यापक राष्ट्रीय उत्सर्जन डेटाबेस महत्वपूर्ण है। यह कहा गया है कि, उत्सर्जन को कम करने की पहल की प्रगति की निगरानी के लिए उत्सर्जन को उनके संबंधित स्रोतों से जोड़ने की आवश्यक है।

अडाणी के खिलाफ विपक्ष ने संसद भवन से ईडी दफ्तर तक निकाला मार्च, रास्ते मे आई पुलिस

नई दिल्ली।
भारत के मशहूर कारोबारी गौतम अडाणी के खिलाफ विपक्ष हमलावर है। सरकार पर उन्हें संरक्षण देने के आरोप लगा रहा है। इस बीच 18 विपक्षी दलों के सांसद इसी मामले पर संसद भवन से प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के कार्यालय तक मार्च शुरू किया व जांच एजेंसी को एक शिकायत सौंपना थी। हालांकि, विपक्ष को उस समय झटका लगा जब शरद पवार की एनसीपी और ममता बनर्जी की टीएमसी ने खुद को इस मार्च से अलग कर लिया। दिल्ली पुलिस ने रास्ते में ही इनके मार्च को रोक दिया।

कांग्रेस के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा, हम अडानी मामले में ज्ञापन सौंपने के लिए ईडी जा रहे हैं लेकिन सरकार हमको विजय चौक के पास भी नहीं जाने दे रही। जो लोग अपने पैसे सरकार के विश्वास के साथ बैंक में रखते हैं वही पैसे सरकार एक व्यक्ति को सरकार की संपत्ति खरीदने के लिए दे रही है। मोदी जी ऐसे लोगों को प्रोत्साहन दे रहे हैं। जिस व्यक्ति ने एक हजार 650 करोड़ रुपए से अपना करियर की शुरुआत की और अब उसके पास 13 लाख करोड़ की संपत्ति है तो हम चाहते हैं कि इसकी जांच हो। प्रधानमंत्री और अडानी का क्या रिश्ता है...?

वहीं कांग्रेस सांसद दिग्विजय सिंह ने कहा कि, भाजपा का यही प्रयास है कि लोकतंत्र को खत्म करो और नियंत्रित लोकतंत्र, रूस और चीन जैसा आए।

अडानी मामले पर जेपीसी जांच की मांग पर कांग्रेस सांसद अधीर रंजन चौधरी ने कहा कि, सरकार जानती है कि, अगर उन्होंने हमारी जेपीसी की मांग को मान लिया तो जनता के सामने उनकी धज्जियां उड़ जाएगी। भाजपा के सभी भ्रष्टाचार आम लोगों के सामने साबित हो जाएंगे।

अमेरिकी वित्तीय शोध संस्था 'हिंडनबर्ग रिसर्च' की रिपोर्ट आने के बाद से अडाणी समूह और प्रधानमंत्री पर लगातार हमला कर रहे विपक्षी दलों के सदस्यों की मांग है कि इस मुद्दे की जांच के लिए संयुक्त संसदीय समिति का गठन किया जाए। उल्लेखनीय है कि 'हिंडनबर्ग रिसर्च' ने अडाणी समूह के खिलाफ फर्जी तरीके से लेन-देन और शेयर की कीमतों में हेर-फेर सहित कई आरोप लगाए थे। वहीं, अडाणी समूह ने इन आरोपों को झूठा करार देते हुए कहा था कि उसने सभी कानूनों और प्रावधानों का पालन किया है। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के सदस्यों ने घरेलू रसोई गैस के दामों में वृद्धि को लेकर संसद भवन परिसर में महात्मा गांधी की प्रतिमा के सामने विरोध-प्रदर्शन किया और सरकार से जवाब मांगा। तृणमूल कांग्रेस के सांसदों ने घरेलू रसोई गैस के दामों में वृद्धि को लेकर सरकार के खिलाफ नारे लगाए और मांग की कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को इस संबंध में जवाब देना चाहिए।

अरुणाचल प्रदेश पर भारत के साथ अमेरिका

नई दिल्ली, एजेंसी।
अमेरिका ने चीन और अरुणाचल प्रदेश के बीच मैकमोहन लाइन को अंतरराष्ट्रीय सीमा के तौर पर मान्यता दे दी है। सीनेट में पेश प्रस्ताव में अरुणाचल प्रदेश को भारत का अभिन्न अंग दिखाया गया है। खास बात यह भी है कि, यह घटनाक्रम ऐसे समय सामने आया है, जब भारत और चीन के बीच वास्तविक नियंत्रण रेखा के पास पूर्वी सेक्टर में तनाव जारी है।

सीनेटर जेफ मर्कले के साथ सीनेट में प्रस्ताव पेश करने वाले सीनेटर बिल हैगर्टी ने कहा, ऐसे समय में जब चीन मुक्त एवं खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिए लगातार गंभीर खतरा उत्पन्न कर रहा है, अमेरिका के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह इस क्षेत्र में अपने रणनीतिक भागीदारों, खासकर भारत के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा रहे। उन्होंने कहा, यह द्विदलीय प्रस्ताव अरुणाचल प्रदेश को स्पष्ट रूप से भारत के अभिन्न हिस्से के रूप में मान्यता देने के लिए सीनेट के समर्थन को दर्शाता है। वास्तविक नियंत्रण रेखा पर यथास्थिति को बदलने के लिए चीन की सैन्य आक्रामकता की निंदा करता है और मुक्त एवं खुले भारत-प्रशांत के समर्थन के लिए अमेरिका-भारत रणनीतिक साझेदारी और 'क्वाड' को मजबूत करता है।

चीन को लगा झटका

अमेरिका में पेश प्रस्ताव में चीन के उस दावे को भी झटका लगा है। जहां वह कह रहा था कि, अरुणाचल प्रदेश पीआरसी यानी पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना का क्षेत्र है। सीनेटर जेफ मर्कले ने कहा, स्वतंत्रता और एक नियम-आधारित शासन का समर्थन करने वाले अमेरिकी मूल्यों को हमारे सभी कार्यों और संबंधों के केंद्र में होना चाहिए, खासकर जब पीआरसी सरकार एक अलग सोच के साथ आगे बढ़ रही है। उन्होंने कहा, प्रस्ताव स्पष्ट करता है कि, अमेरिका अरुणाचल प्रदेश को भारत का अभिन्न हिस्सा मानता है, न कि पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना का... और क्षेत्र में समान विचारधारा वाले अंतरराष्ट्रीय भागीदारों के साथ-साथ वहां समर्थन और सहायता को गहरा करने की अमेरिकी प्रतिबद्धता को दोहराता है।

दाम पूरा वजन अधूरा की तर्ज पर उपभोक्ताओं को लगाया जा रहा चूना

उपभोक्ता दिवसों पर होती है विभागीय नौटंकियां

माही की गूंज झाबुआ, मुज्जमील मंसुरी।

यूं तो जिले में राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस का आयोजन 24 दिसम्बर को किया जाता है। मगर 15 मार्च को विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस मनाया जाता है। हालांकि 15 मार्च को मनाए जाने वाले इस विश्व उपभोक्ता दिवस का कोई सोर सराबा तो नहीं है, लेकिन बावजूद इसके इन दिनों खाद्य एवं नापतोल विभाग लगातार सेंपल लेकर खानापुर्ति करता दिखाई पड़ रहा है। इस खानापुर्ति में दूध व दूध से बनी खाद्य सामग्री पर ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है, इसके अलावा लगभग सबकुछ निरंक ही है। हालांकि उपभोक्ता दिवस को लेकर प्रशासनिक स्तर पर कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहे है। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य यह होता है कि, उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों की जानकारी दी जाए। इस हेतु प्रशासन प्रदर्शनी भी लगाता और उपभोक्ताओं को उपभोक्ता संरक्षण से संबंधित प्रावधानों से अवगत भी करवाता। कार्यक्रमों में वक्ता अपने विचार रखते, किसी भी सामान की खरीदी पर बिल लेने की सलाह दी जाती, किसी सामान के गलत निकलने पर उपभोक्ता फोरम में शिकायत की बात भी बताई जाती। यह कार्यक्रम उपभोक्ताओं को ठगी से बचाने के लिए प्रतिवर्ष आयोजित किये जाते है। लेकिन यह सारी उपभोक्ता दिवस की नौटंकी किन लोगों के बीच होती और इसकी सार्थकता कितनी, यह कार्यक्रम करने वाले ही जाने। किसी बंद कमरे व सभाग्रहों में चंद लोगों के साथ बैठकें कर लेने, फोटो खिंचवा लेने और बड़ी-बड़ी बातें हांकने से क्या इस जिले के आम आदिवासी उपभोक्ता का भला हो पाएगा...? या फिर यह सब नौटंकी सिर्फ अखबारों की सुर्खियां बनने तक ही है। होना तो यह चाहिए कि, उपभोक्ता दिवस पर होने वाले कार्यक्रम सार्वजनिक स्थानों पर हो और आम लोगों को इसकी जानकारी सही तरीके से मिले। लेकिन वर्तमान में राष्ट्रीय व विश्व उपभोक्ता दिवस की हकीकत एक दम विपरीत है। विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस

या राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस जिले से कोई वास्ता नहीं रखता। कारण यह कि, उपभोक्ता अपने अधिकारों से ही अब तक अनजान हैं। नकली शीतल पेय का व्यापार इस समय जोरो पर है। झाबुआ ही नहीं बल्कि इससे जुड़े आसपास के जिलों में इसके जाल फैले हुए है। इसके अलावा खुली खाद्य सामग्री बिकना यहां आम चलन में है। इसके बावजूद रस्म अदायगी करना जैसे प्रशासन की आदत बन चुकी है। केन्द्र सरकार द्वारा रोक लगाने के बाद भी शहर में बिना मानक लगी डिब्बा बंद खाद्य सामग्री बेची जा रही है। नियमों का पालन कराने वाले विभाग के उदासीन रवैये के चलते दुकानदारों द्वारा रोजाना ''दाम पूरा वजन अधुरा'' की तर्ज पर उपभोक्ताओं को चुना लगाया जा रहा है। बावजूद इसके स्थानीय प्रशासन आंखे मूंदे बैठा है। ज्ञातव्य है कि, बांट एवं माप मानक अधिनियम के तहत सरकार ने डिब्बा बंद सामग्री पर माप के लिए मानक लगाना अनिवार्य किया है। बावजूद इसके दुकानदारों द्वारा सरकार के निर्देशों की धज्जियां उड़ाते हुए बेखौफ होकर डिब्बा बंद वस्तुओं को बिना मानक लगाए बेचा जा रहा है। दुकानदारों ने अपनी सुविधा अनुसार डिब्बा एवं थैलियों में बिना तौल किए अंदाज से ही खाद्य सामग्री सहित अन्य वस्तुओं की पैकिंग कर रखी है। इधर, जल्दबाजी के चक्कर में उपभोक्ता भी बिना तौल के ही बिना मानक लगा पैकिंग सामान लेता और चल देता है, लेकिन वास्तव में सामान का तौल किया जाए तो डिब्बों में वजन अनुरूप सामग्री नहीं निकलती। जिले में उपभोक्ताओं को मिलावटी सामान बेचकर बड़ा मुनाफा कमाने का एक बड़ा शोषण चक्र चल रहा है। इस सीजन में तो यह एकदम ऊंचाइयां पकड़ता है क्योंकि गर्मी शुरू होते ही शीतल पेय की मांग व्यापक रूप से गति पकड़ लेती है।नकली शीतलपेय का गौरख धंधा जिले में ठंडे के नाम पर नकली शीतल पेय बेचने का काला धंधा सबसे अधिक चरम पर हर साल रहता है। भगोरिया हाटों के साथ ही इस ठंडे के धंधे में गरमाहट आ जाती हैं। आदिवासी समाज के हर छोटे-बड़े आयोजनों में इसकी मांग जबरदस्त रहती है। देशी माल को इस तरह पेकिंग किया जाता कि, वह दिखने में हू ब हू नेशनल कंपनी के पेकिंग की तरह दिखता। यही कारण है कि, अशिक्षित आदिवासी समाज इसमें ठगी का शिकार होता और नकली पेय बेचने वाले धोखेबाज अपना व्यावसाय जमकर चमकाते। बताया जाता है कि, जिले में यह कारोबार हर रोज लाखों रुपये का होता है। शीतल पेय का यह कारोबार स्थानीय स्तर पर ही अपना मकड़ जाल बनाए हुए है। कंपनी के माल से इस नकली शीतल पेय की कीमतें भी काफी कम होती। जिसके चलते यह उपभोक्ताओं की पहुंच में आसानी से आ जाता है। मार्च से शुरू होने वाला नकली शीतल पेय का यह गर्म धंधा जून और जुलाई तक जारी रहता है। चूंकि जिला आदिवासी बाहुल क्षेत्र है तो यहां शादियों के सीजन में इस गौरखधंधे में जमकर बूम देखा जाता है। क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में अब शादियों में ठंडा पिलाने का चलन बढ़ा है। अल्पशिक्षा या अशिक्षा के कारण यहां नकली-असली को लेकर कोई विरोध भी दिखाई नहीं पड़ता। इन वस्तुओं की पैकिंग जारी खाद्य सामग्री के मामले में तो बारह महीने की कहानी एक जैसी ही है। कोई भी मौसम हो, खुली व दूषित सामग्री बिकती रहती है। सरकारी तंत्र के अपने दावे हो सकते है लेकिन उपभोक्ता के स्तर पर सीधे स्वास्थ्य से जुड़े इस मसले पर कोई चेतना नहीं है। उन्हे ऐसा सामान खरीदकर खाने से कोई परहेज नहीं है। वजह साफ है कि, उन्हें अपने अधिकार का अंदाजा ही नहीं है।

दुकानदारों द्वारा शकर, तेल, चायपत्ती, चावल, दाल, आटा, धनिया, मिर्ची, मसाला, हल्दी, चिप्स, बेसन सहित अन्य सामग्री को 50 ग्राम से लेकर 1 किलोग्राम तक भरकर बिना मानक लगी थैलियों अथवा बंद डिब्बों में बेचा जा रहा है जिसे रोकने वाला कोई नहीं। नियमानुसार बेची गई प्रत्येक सामग्री के डिब्बे अथवा पॉलिथीन पर मानक अनुसार वजन, कीमत सहित दुकान का नाम अंकित होना चाहिए ताकि किसी उपभोक्ता को शिकायत है तो वह दुकानदार के विरूद्ध उपभोक्ता फोरम जा सके।

उपभोक्ता और दुकानदारों को नहीं जानकारी

विभाग की उदासीनता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि, अधिकांश दुकानदारों को बांट एवं माप मानक नियमों की जानकारी नहीं है। वहीं प्रचार-प्रसार के अभाव में उपभोक्ता भी बिना मानक लगी सामग्री खरीदने को मजबूर है। दुकानदारों का कहना है कि, सामान तौलने में लगने वाले समय से बचने के लिए सुविधानुसार सामग्री पेकिंग कर लेते है। यदि संबंधित अधिकारी द्वारा नियमों का हवाला देकर मानक लगाने का कहा जाएगा तो मानक लगाना शुरू कर देंगे।

25 हजार तक जुर्माने का प्रावधान

मानक अधिनियम के तहत यदि कोई दुकानदार बिना मानक लगी सामग्री बेचता है तो उसके विरूद्ध 2 हजार रुपये का जुर्माना किया जा सकता है। इसी प्रकार यदि निर्माता द्वारा बिना मानक लगाए सामग्री बेची जा रही तो उसके विरूद्ध 25 हजार रुपये तक जुर्माना करने का प्रावधान है।

बंद रहता है कार्यालय

शासन द्वारा दुकानदारों से नियमों का पालन करवाने और उपभोक्ताओं के अधिकारों की रक्षा के लिए नाप तौल विभाग की स्थापना की गई है, लेकिन जिला मुख्यालय स्थित नापतोल विभाग का कार्यालय अधिकांश समय बंद रहता है। अधिकारी तो अधिकारी, कार्यालय के कर्मचारी भी कार्यालयीन समय में कार्यालय का दरवाजा बंद कर गायब हो जाते। जिला प्रशासन की लचर कार्यप्रणाली के चलते नापतोल अधिकारी एवं कर्मचारी अपनी मनमर्जी अनुसार कार्यालय चलाते नजर आ रहे है जिससे आम उपभोक्ता नियमों की जानकारी के अभाव में ठगी का शिकार हो रहे है।

जल संकट गहराया, जल-जीवन मिशन ने दिखाया अंगूठा

प्रशासनिक अदूरदर्शिता की सजा जनमानस को सहन करना पड़ रही

माही की गूंज आम्बुआ।

कस्बे की विगत चार दशक से प्यास बुझाती आ रही नल-जल प्रदाय टंकी अब जवाब देने लगी है। उसका पेट नहीं भर पाने के कारण वह जनमानस को प्यासे रखने की हालत में पहुंच रही है। जीर्ण-शीर्ण हालत तथा ट्यूबवेल का जलस्तर पाताल में जाकर जल प्रदाय में समस्या पैदा कर रहा है। यह समय प्रशासनिक अदूरदर्शिता का नतीजा भी कहा जा सकता है जब यह पता चल रहा था कि, विगत महीनों में जलस्तर गिर रहा है तथा टंकी पूरी क्षमता के साथ नहीं भर पा रही है तो समय रहते कोई वैकल्पिक या स्थाई समाधान क्यों नहीं खोजा गया...? जल-जीवन मिशन योजना के ठेकेदार तथा प्रशासन की मिलीभगत से आम्बुआ कस्बे को इस योजना का लाभ भी नहीं मिलने की चर्चा जोरों पर है और जवाबदार चुप्पी साधे बैठे हैं।

प्राप्त जानकारी के मुताबिक आम्बुआ कस्बे की प्यास बुझाने हेतु 30-40 वर्ष पूर्व तत्कालीन सांसद दिलीप सिंह भूरिया (कांग्रेस) द्वारा अथक प्रयास कर आम्बुआ में टंकी का निर्माण कराया गया था। जो कि, अब जिर्ण-शीर्ण होती जा रही है तथा कुछ वर्षों पूर्व इसकी मरम्मत भी की जा चुकी है। जर्जर होती जा रही टंकी से पानी का रिसाव तथा नीचे वाल्व से बहता पानी जो कि, विगत वर्षों से टंकी भरने के बाद रात भर तथा जल प्रदाय के समय वाल्व से व्यर्थ बहते पानी के कारण भी जल आपूर्ति करने वाले ट्यूबवेल का जलस्तर नीचे जाता रहा। अब स्थिति यह बन गई है कि, रात-दिन मोटर चलने के बावजूद टंकी पूरी नहीं भर पा रही है। आम्बुआ कस्बे में पाइप-लाइन के माध्यम से पानी प्रदान किया जाता रहा है। पूरे कस्बे में पांच लाइन है 1 दिन में कुछ घंटे जल प्रदाय एक लाइन में मुश्किल हो पा रहा है स्थिति यह है कि, जहां एक दिन छोड़कर जल मिल रहा था वहीं अब 5 दिन में एक बार मिल रहा है, वह भी जितना चाहिए उतना नहीं मिल पा रहा हैं। कस्बे में नवीन नलकूप खनन की जरूरत महसूस की जा रही है प्रशासन की जल-जीवन मिशन योजना के तहत नवनिर्मित टंकी से जल आपूर्ति की उम्मीद कस्बा निवासी तथा पंचायत प्रशासन लगाए बैठा है, मगर ठेकेदार तथा पीएचई विभाग की मिलीभगत या हठधर्मिता के चलते कस्बे में पाइप लाइन ही नहीं डाली जा रही है। जबकि कस्बा निवासियों से कनेक्शन हेतु आधार कार्ड लगभग हर घर से कर्मचारी ले गए। ठेकेदार का कहना है कि, जितना कार्य उसे कराना था उसने करा दिया आगे विभाग तथा पंचायत जाने इन सबकी ÷नूरा कुश्ती÷ में बेचारी जनता प्यासी मरने को मजबूर हो रही है। संपन्न लोग घरों में ट्यूबवेल खनन करा रहे हैं मगर गरीब कहा जाए। हैण्डपंपो ने जवाब दे दिया तथा नदी-नाले सुख चुके हैं और जवाबदारों के जजबात भी सुख चुके हैं जिसका खामियाजा आगामी चुनाव में भुगतने को जवाबदार भी तैयार रहें, जनता हिसाब चुकता मय ब्याज के करना जानती है।

वरिष्ठ भाजपा कार्यकर्ता तथा पूर्व उप सरपंच भरत माहेश्वरी का कहना है, आम्बुआ में पहली बार जलसंकट दिखाई दे रहा है पानी समय पर तथा पर्याप्त मात्रा में नहीं मिल पाने से लोग परेशान हैं।

जिला पीएचई अधिकारी घनश्याम उपाध्याय कहते है, हैण्डपम्पों का जल स्तर नीचे गिर जाने से वे बंद होते जा रहे हैं, पाइप बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है जल-जीवन मिशन योजना की पाइप लाइन की टेसिंटग की जा रही है, जल्द ही जल वितरण हो सकेगा।

सरपंच रमेश रावत ने बताया, एक बोर पुराना करा हुआ है जिसको पूर्व में मिट्टी से दबा दिये जाने से खराब हो गया, उसी में मशीन से सफाई कराने पर विचार किया जा रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का कार्यक्रम संपन्न

माही की गूंज, करवड़। पेटलावद विकासखंड के अंतर्गत ग्राम करवड़ में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में कृष्ण भगवान संकुल संगठन में महिला सम्मान दिवस का कार्यक्रम रखा गया। जिसमें कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ग्राम पंचायत सरपंच विकास बाबूलाल गामड़ विशेष अतिथि चौकी प्रभारी गोवर्धन मकवाना, कृष्णा मद्धेशिया पंचायतीराज भारत सरकार, राजेश पाटीदार उपसरपंच, धर्मेंद्र सोलंकी अनुसूचित जनजाति पूर्व जिलाउपाध्यक्ष, गोवर्धन केरावत, , आशीष बैरागी सचिव ग्राम पंचायत, जमुना कटारा संकुल अध्यक्ष, नरेंद्र पटेल, सुगना बाई ,सचिव संकुल संगठन उपस्थित रहे। कार्यक्रम में महिला सशक्तिकरण ओर आत्मनिर्भर होने को लेकर चर्चा की गई। आभार व्यक्त सुगना बाई परमार द्वारा किया गया कार्यक्रम का संचालन सीमा सिनम ने किया गया। इस दौरान संकुल संगठन की महिला सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थिति रही।

दूषित पानी पीने के कारण तेजी से फैलती जा रही बीमारियां

तालाब के पानी से नगरवासी हो रहे बीमार, बगैर जांच किए पिलाया जा रहा गंदा पानी

माही की गूंज, कुंदनपुर/राणापुर।

तेजी से फैलती जा रही बीमारी का कारण नगर परिषद द्वारा दूषित पानी सप्लाई करना बताया जा रहा है। रहवासियों का कहना है कि, घर-घर, नल-जल योजना के तहत तालाब का पानी नगर वासियों को मिल रहा है। इस पानी का सभी नगरवासी उपयोग भी कर रहे है। नगर वासियों को नगर परिषद द्वारा बगैर जांच किए मातसूला तालाब का गंदा पानी सप्लाई किया जा रहा है। इस तालाब में बेहद गंदगी फैली हुई है। इसका पानी पीने तो क्या अन्य घरेलू उपयोग में भी नही लिया जा सकता। यहां किनारे पर बैठकर महिलाए कपड़े धोती है, बच्चे तालाब में नहाते हैं। करीब एक महीने पहले से राणापुर नगर वासियों को यही पानी पिलाया जा रहा है, इस कारण राणापुर के लोग बीमार हो रहे हैं।

नगर वासियों को पहले साफ-स्वच्छ पानी उपयोग के लिए मिल रहा था। नगर से दस किलोमिटर दूर मोद सागर से राणापुर वर्षों से पानी पीता आ रहा है, लेकिन इस बार कम वर्षा से वहा भी पानी कम है, जिसको लेकर वहा से पानी बंद कर दिया गया व मातासुला तालाब से पानी पहुंचाया जा रहा है। न ये पानी फिल्टर किया जा रहा है और न ही इसकी स्वच्छ्ता की ओर ध्यान दिया जा रहा है। यहां तक की लोगों को सप्लाई करने से पहले जिम्मेदारों ने पानी की जांच करना तक उचित नहीं समझा। हर घर एक व्यक्ति बीमार है सभी उल्टी-दस्त, सर्दी-खासी बुखार से ग्रसित हो चुके हे व इलाज के बाद भी उनमें सुधार नही आ रहा है। बुजुर्ग से युवा सभी लोग इस बीमारी की चपेट में है।

माही की गूंज ने जब नगर वासियों से चर्चा की तो तारीफ हुसैन, जफर खान, मनीष नायक, केलास राठौड़, अभिषेक जैन ने बताया कि, तालाब की साफ-सफाई नही हुई है साथ ही नगर में पानी पहुंचाने के पहले यह पानी पीने योग्य है या नहीं इसकी जांच भी नही हुई है। इस पानी को जांच करावाने की और नगर परिषद् ने ध्यान नहीं दिया। नगर वासियों को पानी पिलाने से पहले चेक क्यों नही किया गया ।

इतनी लापरवाही क्यों

इस संबध में सीएमओ साहब का जवाब था कि, पानी की जांच हमारे द्वारा की गई है लेकिन अभी कोई दस्तावेज हम नहीं दे सकते। क्योंकि परमार छुट्टी पर है वह आएंगे उसके बाद आपको दिखा देंगे।

तेजमल गाहरी ने बताया कि, जब में राणापुर सीएमओ के पास पानी की जरूरत पर टैंकर रसीद कटाने के लिए गया तो उन्होंने मुझे यह कहते हुए मना कर दिया कि पानी पीने योग्य नहीं है इसलिए हम अभी आपको टैंकर नही दे सकते

अब सवाल उठता है कि, सीएमओ साहब एक तरफ कह रहे हैं की पानी पीने योग्य है और दूसरी तरफ सीएमओ खुद बता रहे पानी पीने योग्य नही।

दिखावे के लिए उपकृषि मंडी में शुरू हुई फसल की नीलामी

मंडी कर्मचारियों के द्वारा नहीं दिया गया जनप्रतिनिधियों को न्यौता

माही की गूंज, करवड़।

बुधवार को स्थानीय कृषि उपज मंडी में गेहूं की फसल की नीलामी शुरू हुई। कृषि मंडी में भार साधक अनुविभागीय अधिकारी अनिल कुमार राठौर एवं अश्विन वसावा मंडी सचिव के निर्देशन में उपमंडी प्रांगण करवड़ में कृषि उपज का नीलामी कार्य समस्त व्यापारियों की उपस्थिति में प्रारंभ किया गया। जिसमें उपमंडी के कर्मचारी सहायक उपनिरीक्षक कांतिलाल कटारा, भीमसिंह वसुनिया, सहायक उप निरीक्षक राजेश मीणा सहयोगी रहे। शुभारंभ में फसल की नीलामी गेहूं के भाव इस प्रकार रहे, न्यूनतम 1850, अधिकतम 2211 और प्रचलित 2100 भाव गेहूं की आवक अनुमानित 150 क्विंटल रही।

एक दिन की दिखावे की नीलामी

नीलामी प्रक्रिया में कुछ चुनिंदा कृषक अपने निजी वाहनों से मंडी प्रांगण में फसल लाऐ थे, जिसमें गांव के व्यापारियों द्वारा बोली लगाकर गेहूं फसल की नीलामी प्रक्रिया को शुरू की गई। नीलामी प्रक्रिया में देखने को मिला कुछ कृषक फसल लेकर तो आए जरूर थे, लेकिन व्यापारियों अपना तोलकाटा नहीं लाऐ। फसल की नीलामी कि गई एवं उनकी निजी दुकानों पर जाकर वहां तोल करवाया गया अगर तोलकाटो की बात की जाए तो बीते कुछ समय पहले तोलकाटो में गड़बड़ी की बातें एवं शिकायतें कई बार हुई है इसलिए कृषकों के लिए निजी दुकानों पर तोल होना यह एक समस्या है। जिसमे अधिकारी के कानों तक यह बात नहीं जाती। गांव करवड़ में कई कृषकों का आरोप है कि, मंडी में दिखावटी शुभारंभ किया गया है। उसके बाद पूरी सीजन मंडी में ना कोई तोल होता है और ना ही कोई अधिकारी इस ओर ध्यान देते हैं।

मंडी अधिकारियों से माही की गूंज के प्रतिनिधी ने जब चर्चा की तो उन्होंने कहा कृषक जागरूक होंगे और कृषक अगर मंडी में अपनी फसल लाते हैं तो जो व्यापारी मंडी में खरीदी करने नहीं आएगा, उसके खिलाफ हम कानूनी प्रक्रिया के माध्यम से नोटिस जारी करेंगे।

भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ा 80 लाख की लागत से बना खेल स्टेडियम

आरईएस विभाग की उदासीनता के चलते सात साल बाद भी उपेक्षित और अपूर्ण है खेल स्टेडियम

माही की गूंज ,बदनावर।

जनहितेषी योजनाएं समय रहते धरातल पर पूरी नही हो पाती है। इसका जीताजागता उदाहरण करीब 80 लाख रूपए की लागत का ग्रामीण खेल स्टेडियम है। जिसमे जमकर भ्रष्टाचार किया गया। इसकी निर्माण एजेंसी आरईएस विभाग है। जिसकी उदासनीता के कारण सात वर्षो पश्चात भी मैदान पूर्ण नही हो पाया है। अब जिम्मेदार अधूरे निर्माण कार्यो को पूरा करने के लिए फिर से स्टीमेट तैयार करने की बात कह रहे है। इधर लोगों का कहना है कि, 80 लाख की भारी भरकम राशि खर्च कर केवल बाउंड्रीवाल, गैलरी, कक्ष, लोहे के गेट लगाए है। यदि थोड़ी सी राशि उसके समतीकरण में और खर्च कर दी जाती, तो यह मैदान शुरूआती समय से ही खेल गतिविधियों के लिए उपयोगी साबित हो सकता था। जनपद पंचायत क्षेत्र में खेल गतिविधियों को बढ़ावा देने के उददेश्य से साल 2014-15 में करीब 80 लाख रुपए की स्वीकृत लागत से ग्रामीण खेल मैदान (स्टेडियम) की स्वीकृति मिली। साल 2015-16 में इसका निर्माण पेटलावद मार्ग पर नागेश्वर धाम के आगे ग्राम पंचायत खेड़ा की भूमि में प्रारंभ किया गया। संबंधित निर्माण एजेंसी आरईएस विभाग की देखरेख में कार्य की शुरूआत हुई। 39 हजार वर्ग मीटर में स्टेडियम में बाउंड्रीवाल और कक्ष, गैलरी आदि निर्मित हो चुके है लेकिन मुख्य जगह मैदान अब तक पूर्ण नही पाया। इसका एक हिस्सा अभी तक उबड़-खाबड़ है। जिससे इसमें खेल गतिविधियां संचालित नही हो पाती है। जबकि जो निर्माण हो चुका है वो अब भी उपेक्षित रहने से धीरे धीरे जर्जर हो रहा है। लावारिस अवस्था में होने तथा समुचित देख-रेख के अभाव में कमरों से बिजली के बोर्ड, पंखे, बल्ब और कमरों की फर्श तक उखाड़कर बदमाश उखाड़कर ले गए। बाउंड्रीवाल में भी दरारें आने लगी है। शौचालय और मूत्रालय में गदंगी व्याप्त हो गई है। विभागीय उदासीनता के चलते मैदान अपूर्ण होने से यहां आज तक इस परिसर में किसी भी तरह की कोई खेल गतिविधि संचालित नही हो पाई है। हां कोविडकाल के पूर्व मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के अंतर्गत सामूहिक विवाह का आयोजन जरूर किया गया था। समय समय पर खेलप्रेमियों तथा आमजन द्वारा इस स्टेडियम को पूर्ण करने की बात कहीं जाती है किंतु तीन चार वर्षो में स्टीमेट से आगे बात ही नही बढ़ पा रही है। जबकि विभाग द्वारा पूर्व में स्टेडियम को पूर्ण बताकर इसे ग्राम पंचायत खेड़ा के सुपुर्द करने की बात भी कही गई थी। किंतु खेड़ा पंचायत ने अपूर्ण खेल मैदान को अपने अधीन लेने से साफ इंकार कर दिया था। गत माह गांव गांव में में निकाली गई विकास यात्रा के दौरान भी इस स्टेडियम के कार्यो को पूर्ण करने की मांग लोगों ने जनप्रतिनिधियों व अधिकारियों के समक्ष रखी। इसके बाद फिर से स्टीमेट तैयार करने की कवायद शुरू होने की सुगबुगाहट हो रही है।

पहले समतलीकरण किया नहीं, अब इसके लिए दोबारा होगी शुरूआत

इस बारे में संबंधित निर्माण एजेंसी आरईएस के एसडीओ राजेश परमार का कहना है कि खेल मैदान को पूर्ण करने के लिए करीब 40 लाख की लागत का स्टीमेट तैयार कर स्वीकृति के लिए भेजा गया था किंतु फंड के अभाव में स्वीकृत नही हो पाया। अब मैदान के अंदर उबड़-खाबड़ वाले स्थान के समतीकरण का कार्य रोजगार गारंटी योजना के तहत किए जाने के बारे में प्रयास किए जाएंगे।

इस संबंध में कांग्रेस आईटी सेल जिला अध्यक्ष अश्विन पाटीदार का कहना है कि, आरईएस विभाग के 5 सालों के कामों की इमानदारी से जांच की जाए तो करोड़ों के भ्रष्टाचार निकलेंगे फाइलों में ही काम पूर्ण हो चुके हैं मगर इस खेल मैदान की तरह कई कार्य अपूर्ण है।

राजनीतिक हलचल...

सिटिंग एमएलए होने के नाम पर टिकिट मांग रहे विधायक मेड़ा, पंद्रह माह की सरकार में दिए साथ की दे रहे है दुहाई

खुद के खोदे गड्ढे में गिर सकते हैं विधायक, मिल रही टिकिट के लिए कड़ी चुनौती

माही की गूंज, पेटलावद।
राकेश गेहलोत

साल के अंत होते-होते ये तय हो जाएगा कि, प्रदेश के सिंहासन पर कौन बैठेगा और किसकी सरकार बनेगी। लेकिन 15 साल बाद 15 माह के लिए प्रदेश में वापसी करने वाली कांग्रेस और जैसे-तैसे प्रदेश में सरकार में लौटी भाजपा ने चुनाव की तैयारियों शुरू कर दी है। 2018 के चुनाव के मुकाबले ये चुनाव और दिलचस्प होना है तय है। आदिवासी वोटो से प्रभावित सीटो पर जयस जैसे संगठनों की मजबूत उपस्थित और भोपाल की एक जनसभा में मध्यप्रदेश कीं सभी सीटों पर चुनाव लड़ने की घोषणा कर आम आदमी पार्टी जो गुजरात चुनाव में अपने प्रदर्शन से कांग्रेस के लिए मुसीबत बन गई और कांग्रेस के सत्ता में वापसी के रास्ते मे रोड़ा बन गई। गुजरात के नतीज़ों से प्रभावित कांग्रेस मध्यप्रदेश में चुनाव लड़ने की नई रणनीति के साथ मैदान में उतरने की तैयारी में, तो भाजपा, जयस और आम आदमी पार्टी की उपस्थिति से फायदा उठाने की रणनीति जुट गई।

वर्तमान में जिले की तीनों विधानसभा कांग्रेस के खाते में है। पेटलावद विधानसभा से विधायक वालसिंह मैडा फिर इस सीट से मैदान में उतरने की तैयारी करते नजर आ रहे हैं और कांग्रेस से चौथी बार टिकिट की मांग कर रहे है। हालांकि इस बार वालसिंह मेंडा के लिए हार या जीत से बडी चुनोती कांग्रेस से टिकिट लाने की होगी। वर्ष 2008 में विधायक मैंडा पहली बार भाजपा के बागियों की उपस्थित के कारण जीते। तो 2013 में वालसिंह को हार का सामना करना पड़ा। 2018 में फिर से सरकार परिवर्तन की हवा और एंटी निर्मला ग्रुप के विरोध के चलते लगभग पांच हजार के मामूली अंतराल से जैसे-तैसे जीत मिली। परिमाण में नोटा वोट की संख्या हार-जीत के अंतर के बराबर थी, जो प्रदेश में हुई वोटिंग में सबसे ज्यादा नोटा वोट वाली विधानसभा में से एक रही थी। पेटलावद विधानसभा में चुनाव सिटिंग एमएलए के खिलाफ एन्टी इनकम्बेंसी होती हैं, जिससे बचने का एक मात्र तरीका चेहरा बदल कर मैदान में उतरना हो सकता है। वर्ष 2008 में सिटिंग विधायक निर्मला भूरिया को हार मिली। तो 2013 में विधायक वालसिंह मैडा को तो 2018 में फिर से विधायक निर्मला भूरिया को हार का समाना करना पड़ा। रोटेशन को देखा जाए तो कांग्रेस अगर वालसिंह के साथ ही मैदान में जाती है तो परिणाम विपरीत होने की संभावना है। हॉलाकि हर बार की तरह ये चुनाव निर्मला ओर वालसिंह के इर्दगिर्द ही नही बल्कि नए चेहरों की मांग के बीच नए दावेदारों के

आसपास तक पहुच चुका है। जहां भाजपा के साथ-साथ कांग्रेस में भी ताकतवर नए चेहरे को विकल्प के रुप मे मौजूद हैं।

स्थानीय चुनाव में परिवारवाद से नाराज़ नेता

टिकिट की जुगाड़ में घूम रहे वालसिंह इस बार मुश्किल में नजर आ रहे हैं, जो खुद के खोदे गड्ढो में गिर सकते हैं। विधायक साहब के इस कार्यकाल में हुए स्थानीय चुनाव में अपने गृह क्षेत्र को छोड़कर बेटे को जिला पंचायत चुनाव, पेटलावद क्षेत्र से लड़वा दिया, जिससे स्थानीय कांग्रेस नेताओ को चुनाव मैदान में नुकसान उठाना पड़ा। वही खुद के गृह क्षेत्र में कांग्रेस समर्थित होकर मैदान में उतरी कांग्रेस के कद्दावर नेता रूपसिंह डामोर की पुत्री के सामने विधायक ने खुद की पुत्री को मैदान में उतारकर कांग्रेस को चुनाव हरवा दिया। बताया जा रहा है कि, खुद के बेटे की जीत के चक्कर मे विपक्षियों से भी साठ-गांठ कर दूसरे क्षेत्रों में भाजपा को वनवे कर दिया। पेटलावद जनपद अध्यक्ष पद को लेकर भी विधायक मैंडा असहयोग के चलते जनपद में भी कांग्रेस को करारी हार मिली। यहां जयस द्वारा कांग्रेस अध्यक्ष के दावेदार को समर्थन दिया था, लेकिन विधायक ने जयस को भी निराश किया क्योकि उपाध्यक्ष पद को लेकर समझौता हुआ था।

वालसिंह को टिकिट, तो जयस होगी स्वत्रंत मैदान में

2023 के विधानसभा चुनाव में जयस संगठन की भूमिका महत्त्वपूर्ण रहेगी ये तय है। जिस प्रकार से जयस तैयारी कर रही है, जयस चुनाव मैदान में हो सकती है। वही भाजपा और कांग्रेस से टिकिट की दावेदारी स्वीकार होने पर समझौते की चर्चा है। कांग्रेस की और से अगर वालसिंह मैडा को टिकिट मिलती है, तो जयस स्वतंत्र रुप से मैदान में उतरेगी जो कांग्रेस के लिए परेशानी का सबब है। हालांकि कांग्रेस उसी चेहरे को मौका देने का मन बना रही हैं जो जयस संगठन से पटरी बैठा ले।

15 माह की सरकार में दिए साथ की दुहाई देकर टिकिट के लिए बना रहे दबाव

2018 के चुनाव में सरकार में आई कांग्रेस को भाजपा ने जैसे-तैसे सरकार से बाहर कर दिया था। इस दौरान कांग्रेस के कई विधायक भाजपा में शामिल हो गए। चर्चा पेटलावद के विधायक वालसिंह मैडा के भी भाजपा में जाने की हुई थी, लेकिन अंत मे कांग्रेस वालसिंह को रोकने में कामयाब रही थी । उसी समय मे कांग्रेस के साथ देने के नाम पर वर्तमान विधायक कांग्रेस पर 2023 में टिकिट के लिए मांग कर रहे हैं। विधायक मैडा की ग्राउंड रिपोर्ट और पूरे कार्यकाल में एक बार भी विधानसभा में कोई सवाल प्रदेश की जनता के लिए नही कर पाए न ही इस कार्यकाल में क्षेत्र को कोई बड़ी उपलब्धि नही दिला पाए। कृषि कॉलेज से लेकर नहर वंचित गाँवो तक नहर पहुचाने सहित कई बड़ी उपलब्धियो की आवश्यकता क्षेत्र को हैं। जिसके लिए विधायक आज तक कोई मांग करते नही दिखे।

झाबुआ-थांदला के जुआरी को गुजरात में जुआ खेलते पकड़ा

माही की गूंज, थांदला।

मंगलवार की रात्रि दाहोद तहसील के राचेड़ा गांव में मुकबरी के आधार पर बड़े स्तर पर जुआ चलने की सूचना मिली थी। इसके बाद टीआई केडी डिंडोर के नेतृत्व में गठित टीम ने घेराबंदी कर एक सुने मकान में दबिश दी। दबिश के दौरान जुआ खेल रहे 24 जुवारियो को पुलिस ने मौके पर धरदबोचा। प्राप्त जानकारी के अनुसार पकड़ाए गए जुवारिओ के पास से 28 हजार नकद राशि, ताश के पत्ते, 11 बाइक और 1 कार दाहोद पुलिस ने जप्त की हैं, कुल मिलाकर पकड़ाए गए जुवारियो के पास से करीबन 8 लाख का माल जब्त किया गया हैं।

पकड़ाए गए जुवारियों में 18 जुवारी झाबुआ और थांदला के रहने वाले है। जिसमें करीम सब्बीर शेख निवास झाबुआ, सलमान सलीम कुरेशी निवास रोहिदास मार्ग धोबीवाड, पंकज मनमोहन चौहान निवास झाबुआ, जहीरखान सरदार खान पठान निवास झाबुआ, जाकिर यासीन बेग निवास थांदला, आनद नारायण माली निवासी झाबुआ, अब्दुल रऊफ शेख निवासी थांदला, साजिद गफ्फार खान निवासी झाबुआ, सद्दाम अनवर हुसैन निवासी झाबुआ, प्रेम राजू राठौर निवासी थांदला, चेतन मगन नाई निवासी झाबुआ, अब्दुल रेहमान अब्दुललतीफ रंगरेज निवासी थांदला, गोर्वधन कालूराम वोरा निवासी थांदला, सूरज किशोर माली निवासी झाबुआ, जिंतु काला मावी निवासी रसोड़ी, काली डूंगरी, मेघनगर, राजेश रामचंद्र सेन निवासी थांदला, दीपक ओंकार प्रजापति निवासी थांदला, आलोक शांतिलाल रूनवाल (जैन) निवासी झाबआु को मौके से गिरफ्तार किया।

शीतला माता की पूजा के साथ निकला जुलूस

माही की गूंज, खवासा।

हिंदू परंपरा में शीतला सप्तमी का भी एक विशेष महत्व है। मान्यता है कि, मां शीतला की पूजा-अर्चना करने पर सभी रोगों से छुटकारा मिलता है। होली के सातवे दिन शीतला सप्तमी का व्रत होता हैं। होलिका दहन से शीतला सप्तमी तक होलिका दहन की राख को प्रतिदिन शीतला सप्तमी तक पानी से ठण्ड़ा किया जाता है। वही शीतला सप्तमी के एक दिन पुर्व तक नाना प्रकार के व्यंजन बनाए जाता है एंव शीतला माता की पूजा हेतु पुजा सामग्री भी पृथक बनाई जाती है। वही ठण्डी उर्फ बासी पुजा सामग्री एंव नाना प्रकार के व्यंजनो के साथ महिलाए शीतला सप्तमी की अल-सुबह उठ सज सवरकर पुजा करने जाती है और परिवार में सभी को स्वस्थ एवं जीवन की मंगलकामना हेतु प्रार्थना की जाती है।

खवासा में मंगलवार को शीतला सप्तमी के अवसर पर लोहार मोहल्ले के पीछे स्थित मंदिर पर महिलाए सज सवरकर पूजा-अर्चना करने गई एवं साथ ही बच्चे एवं पुरुष भी दर्शन करने मंदिर पहुंचे। महिलाओ ने सुख-समृद्धि एवं सभी को स्वस्थ रखने की मनोकामना की। मंदिर से पूजा कर घर आने पर घर-आंगन में गोबर से पंथवारी की पूजा की गई। शीतला माता मंदिर पर एक दिन पूर्व से ही माताजी के अनुयायी कहे जाने वाले प्रजापति समाज नें पूरे मंदिर का रंग-रोगन कर विद्युत साज-सज्जा की गई। वही पूजा-अर्चना के बाद प्रजापति समाज ने बैंण्डबाजे के साथ सभी महिलाए-पुरुष एंव बच्चो ने रंग-गुलाल की बौछार के साथ जुलूस निकाला गया और जुलूस में शामिल सभी प्रजापति समाज की महिलाए-पुरूष एंव बच्चो ने बैंण्डबाजे की धुन पर गरबा नृत्य करते हुए गांव में जुलूस निकाला और ग्राम व क्षेत्र की सुख-समृद्धि एंव स्वस्थ रहने की मंगलकामना भी प्रजापति समाज ने सामूहिक रूप से की।

शीतला माता मंदिर पहुंचकर महिलाओं ने किया सामूहिक रूप से पूजन

माही की गूंज ,सारंगी।

होली-रंगपंचमी पर्व निपटने के बाद शीतला सप्तमी का पर्व बड़े ही उत्साह के साथ मनाया गया। इस पर्व को लेकर नगर सहित ग्रामीण क्षेत्रों में भी महिलाओं ने शीतला माता मंदिर पहुंचकर पूजन कर घर की सुख समृद्धि के लिए प्रार्थना की। एक दिन पहले ही तरह-तरह के पकवान बनाकर मां को ठंडे पकवान चढ़ाएं। ऐसा कहा जाता है, होली के बाद आने वाली शीतला सप्तमी से ही गर्मी में ठंडे भोजन की शुरुआत होती है। इस दिन शीतला माता को ठंडा भोजन चढ़ाकर सभी घर परिवार के सदस्य ठंडा भोजन करते हैं। इस दिन घर में चुल्हा नहीं जलाया जाता है, शीतला सप्तमी मंगलवार को सामूहिक रूप से मनाई गई। माता पूजन के लिए महिलाएं ब्रह्म मुहूर्त में अलसुबह मंदिरों में पूजा के लिए पहुंच गई। कतार में लगने के बाद अपनी बारी आने के बाद पूजन किया।

रातों रात पेड़ के नीचे से गायब हुए भोलेनाथ और नन्दी, चोरी की आशंका

माही की गूंज, रायपुरिया।

मंगलवार ऐसा वाकिया सामने आए जिसे जान कर सब चोक गए। पीपल के पेड़ के नीचे विराजित भगवान भोलेनाथ का शिवलिंग और नंदी की प्रतिमा गायब हो गई, जो नगर में चर्चा का विषय बन गया है। फिलहाल नन्दी ओर शिवलिंग चोरी की आशंका जताई जा रही है। झाबुआ चौराहे के मवेशी एवं गल ग्राउंड मे एक पीपल के नीचे भगवान भोलेनाथ के शिवलिंग स्थापित थे। बताया जा रहा मंगलवार रात में चोर चोरी कर ले गए। सुबह चाय की दुकान चलाने वाले अमृत मेंडा अपनी दुकान खोलने के पहले वह दर्शन करते थें, लेकिन वहां पर शिवलिंग नहीं थी यह देखकर उनके होश उड़ गए। फिर अपने आसपास के लोगो को बताया कि, भगवान की चोरी हो गई है। सुबह गस्त कर रहे पुलिस जवानों को भी इस घटना के बारे बताया।

गांजे के साथ आरोपी गिरफ्तार

माही की गूंज, थांदला।

पुलिस ने नशाखोरी के खिलाफ कार्रवाई करते हुए एक आरोपी को 3 सौ ग्राम गांजा के साथ पकड़ा है। आरोपी नगर की सीमा पर ढाबा संचालित कर नशे का व्यापार कर रहा था।

जानकारी देते हुए थाना प्रभारी कैलाश चौहान ने बताया कि, रविवार को मुखबिर से सूचना मिली कि, आरोपी अमजद पीता शाबाज खान थांदला के समीप गांव सेमलिया में ढाबे पर गांजा बेच रहा है।

टीम ने मौके पर जाकर देखा तो आरोपी के पास 3 सौ ग्राम गांजा बरामद हुआ। जिसकी कीमत 5025 रुपए है। थाना प्रभारी चौहान ने बताया कि, आरोपी के खिलाफ नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्सटेंस एक्ट के तहत प्रकरण पंजीबद्ध कर उसे गिरफ्तार कर लिया गया है।

फिर बिगड़ा मौसम, गेंहू की फ़सल में नुकसान जारी

तेज हवा के चलते पेड़ हुआ धराशाई, मार्ग बाधित

माही की गूंज , पेटलावद। पिछले हफ्ते में बदले मौसम और बारिश के बाद मौसम विभाग द्वारा बारिश की संभावना बताई जा रही थी। खेतो में खड़ी गेंहू की फसल को नुकसान की बढ़ती संभावनाओं के बीच बुधवार को एक बार फिर से मौसम ने करवट ली और पेटलावद सहित आसपास के क्षेत्र में तेज हवाओं के साथ हल्की बारिश हुई। जिससे खेतो में खड़ी गेंहू की फसल को एक बार फिर नुकसान हुआ है। साथ ही तेज़ हवाओ के कारण बाबड़ी-बरवेट मार्ग पर एक बड़ा पेड़ धराशाई होकर मुख्य मार्ग पर गिर पड़ा, गनीमत रही इस दौरान कोई वाहन मार्ग से नही गुजर रहा था। पेड़ के बीच सड़क पर गिर जाने से मार्ग का यातयात प्रभावित हो गया और सड़क से गुजरने वाले वाहनों को लम्बे समय तक रुकना पड़ा या मार्ग बदलना पड़ा। कृषक जितेंद्र पाटीदार ने बताया कि, पहले हुई बारिश और बुधवार को बारिश और तेज़ हवाओ से फसलों को नुकसान हुआ है खासकर गेंहू की फसल को ,प्रशासन को खेतों में हुई नुकसानी का सर्वे कर मुआवजा देना चाहिए।

गाय के हत्यारों को आखिर क्यों दिया जाता है संरक्षण

माही की गूंज, खवासा।

जहां एक तरफ तो शिवराज सरकार के मंत्री कहते हैं, जो गाय की पूजा करता है या उसे पालता है उसी को चुनाव लड़ना चाहिए। वहीं इसी शिवराज सरकार का कुलमा सरेआम गाय के हत्यारों व गोमांस परिवहन करने वाले को संरक्षण देते नजर आता हैं। नतीजन क्षेत्र में ऐसे कई मामले भी सामने आए हैं जिसमें किसी अन्य की गाय को चुरा लिया और उसकी हत्या कर उसके मांस को सामूहिक रूप से खाया गया है।

वहीं रतलाम की ओर से भी क्षेत्र में गोमांस परिवहन होकर विक्रय हेतु आ रहा है, जिसका खुलासा भी पिछले दिनों रतलाम की ओर से दिनदहाड़े बड़ी मात्रा में गौ मांस का परिवहन होते वाहन सहित लोगों ने रेकी कर पकड़ा और पुलिस ने मामला भी दर्ज किया। तय है यह परिवहन और क्षेत्र में हो रही गौं हत्याओं को देखते हुए साफ जाहिर हो रहा है कि, गौ हत्याओ का यह गोरखधंधा बिना सरकारी सिपाहारो के सहयोग के बिना संभव नहीं है।

बात करें 1 मार्च की तो इस दिन खवासा पुलिस ने भी गोवंश वध प्रतिनिषेध अधिनियम 2004 के तहत 4,5 और 9 की धारा के अंतर्गत मामला दर्ज किया था। लेकिन फरियादियों द्वारा आज भी पुलिस पर आरोप लगाते हुए गाय के हत्यारों को संरक्षण देने के आरोप लगा रहे हैं।

यह था गौ हत्या का मामला

ग्राम परवाड़ा निवासी हिंदूडा पिता वरसिंह भाभर की आसमानी रंग और बड़े सिंग, जिसके कान पर 786206 का बेच लगा था। जो 28 फरवरी को चरने के लिए गई थी लेकिन शाम को घर नहीं आई व ढूंढने पर गाय नहीं मिली। वही गांव के ही सूक्का पिता मलसिंह गामड़ का कुत्ता उसके मुंह में गाय का कटा हुआ पैर 1 मार्च बुधवार को उसके मुंह में दबाकर हिंदूड़ा के खेत व घर की ओर आते देखा तो शंका होने पर हिंदुड़ा व उसके परिवार के कुछ सदस्य सुक्का गामड़ के खेत व घर की ओर देखने गए तो सूक्का के खेत में बने मकान में गोबर एवं खून के धब्बो का फैलाव होकर गौ हत्या में उपयोग किये औजार व बर्तन पड़े थे। वही घर के बाहर खेत में गौ मांस के टुकड़े व कुएं के अंदर उसकी गाय का बिछा नुमा सर पड़ा देखा। जिसपर 1 मार्च को हिंदूडा ने गाय के हत्यारों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई करने हेतु रिपोर्ट दर्ज की। जिस पर पुलिस ने सूक्का गामड़ व तेजू पिता सेतु डामर को गिरफ्तार किया था।

गाय के हत्यारो ने गाय का सिर काट कुए के अंदर फेक पानी को भी किया दुषित।।

बताते हैं, गांव वालों के सामने सूक्का व तेजू ने पुलिस को 12-13 लोगों का नाम उजागर किया। जिसमें गाय चोरी से लेकर उसकी हत्या व हत्या करने के बाद गौ मांस का सेवन करने में बराबर की भागीदारी बताई। लेकिन पुलिस ने गाय चोरी का मामला दर्ज नहीं करते हुए सिर्फ गौ वध प्रतिनिषेध अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर दो की गिरफ्तारी के साथ अपने कार्य की इतिश्री कर दी। वहीं फरियादी का पुत्र सुरेश व परिजन पुलिस चौकी में आकर अपनी पीड़ा बताते हैं कि, बचे हुए अन्य अपराधी उनके घर जाकर धमका रहे हैं कि, जैसे गाय की हत्या की है वैसे तुम्हारी भी हत्या कर देंगे अगर हमारे सभी के नाम से मामला दर्ज करने के लिए पुलिस चौकी में जाओगे तो।

वहीं गौ हत्यारों को संरक्षण देने वाली पुलिस मामले को हल्के में लेकर अन्य और 2-3 का नाम उक्त मामले में दर्ज कर मामले की खानापूर्ति कर रही है। लेकिन फरियादियों का कहना है, उन सभी के नाम जो गाय चोरी से लेकर गाय की हत्या कर मांस खाने में शामिल है उन सभी के विरुद्ध मामला दर्ज करना चाहिए और उनकी गिरफ्तारी भी होना चाहिए।

इस संबंध में चौकी प्रभारी नवलसिंह बघेल ने बताया कुल 5 के विरुद्ध मामला दर्ज किया है, दो की गिरफ्तारी होकर 3 फरार है जिन्हें भी जल्द गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

संपादकीय

भारतीय दर्शन व मेधा की दोहरी कामयाबी, सचमुच नाचा देश

आरआरआर फिल्म के विश्वविख्यात गाने 'नाटू-नाटू' यानी 'नाचो-नाचो' की कामयाबी पर सचमुच पूरा देश खुशी से झूम उठा है। ऐसा पहली बार हुआ कि भारतीय परिवेश, जीवन दर्शन और संगीत पर आधारित दो प्रविष्टियों को अकादमी अवाड्र्स की दो श्रेणियों में ऑस्कर अवॉर्ड मिले हों। जहां 'नाटू-नाटू' को ओरिजनल सॉन्ग की श्रेणी में ऑस्कर पुरस्कार मिला, वहीं कार्तिकेय गोंजाल्विस व गुनीत मोंगा की डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'द एलिफेंट व्हिस्परर्स' को सर्वश्रेष्ठ डॉक्यूमेंट्री श्रेणी में यह सम्मान मिला। जब भी किसी रचना को शिखर की सफलता मिलती है तो निस्संदेह उसकी गुणवत्ता भी उस स्तर की रही होगी। जहां पूरी दुनिया की प्रतिभाएं मुकाबले में होती हैं। फिर ऐसी किसी रचना की अंतर्राष्ट्रीय स्वीकार्यता का प्रश्न भी होता है। विकसित देश तकनीक, सुविधा और संसाधनों के मुकाबले में हमसे कहीं आगे हैं। ऐसे में उनके घर में उनकी प्रविष्टियों को पीछे छोड़ना निस्संदेह बड़ी चुनौती होती है। आज पूरी दुनिया यदि 'नाटू-नाटू' पर झूम रही है तो उसके मूल में फिल्म के डायरेक्टर एस.एस. राजामौली की दृष्टि और तपस्या भी है। सही मायनों में यह उम्दा निदेशक, गीतकार, संगीतकार और कलाकारों की त्रुटिरहित जुगलबंदी का ही नतीजा है कि एक उत्कृष्ट गीत सामने आया। दरअसल, दक्षिण भारत के चर्चित अभिनेता एनटीआर जूनियर व रामचरण के उम्दा डांस, निदेशक राजामौली की पारखी-सधी दृष्टि,संगीत निदेशक एम.एम. किरावानी और गीतकार चंद्रबोस की मौलिक प्रतिभा ने यह इतिहास रचा है। यूं तो इस गाने ने पहले भी कई अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार जीते हैं, लेकिन ऑस्कर के मायने बड़े हैं। जब दुनिया ने गीत को ओरिजनल माना तो उसमें जरूर ऐसा दमखम रहा होगा। मौलिक गाने का मानक होता है कि गाने की धुन, विषय व अर्थ पर किसी अन्य गाने का प्रभाव न हो। दक्षिण के दो बेहतरीन डांसर एनटीआर व रामचरण की जुगलबंदी ने इस गाने की स्वीकार्यता को नई ऊंचाई दी। वे मौलिक रचना व हृदयस्पर्शी धुन को उस स्तर तक ले गए, जहां इसे सुनकर हर कोई वाह-वाह कहने को बाध्य हो जाए।

दरअसल, इन कलाकारों ने गीतकार चंद्रबोस के शब्दों, किरावानी के संगीत तथा राजामौली की सोच को वो ऊंचाई दे दी कि पूरी दुनिया 'नाटू-नाटू' करने लगी। वहीं इस गीत में वर्ष 1920 के तेलंगाना व आंध्रप्रदेश के उस परिवेश व तेवर को भी जीवंत किया गया जो फिरंगियों से दो-दो हाथ कर रहा था। दरअसल, तमाम बदलावों, रिटेक, पुनर्लेखन के बाद और पसीना बहाकर यह उपब्लधि हकीकत बनी। सोमवार की सुबह जिस दूसरी कामयाबी से भारतीय आह्लादित हुए वह थी 'द एलीफेंट व्हिसपर्स' का पहली बार देश की तरफ से किसी डॉक्यूमेंट्री के लिये ऑस्कर का जीतना। सर्वोत्तम डॉक्यूमेंट्री का पुरस्कार जीतने वाली इस कृति के मुकाबले में कई चर्चित डॉक्यूमेंट्री थीं। लेकिन प्रकृति व जीवों के सहअस्तित्व की भारतीय अवधारणा को चित्रित करने वाली 'द एलीफेंट व्हिसपर्स' ने कामयाबी की नई इबारत लिखी। दरअसल,यह डॉक्यूमेंट्री एक ऐसे भारतीय दंपति बोम्मन व बेल्ली की मार्मिक कहानी पर आधारित है जो एक मरणासन्न हाथी के बच्चे को नया जीवन देकर उसे अपने बच्चे की तरह पालते हैं। तमिलनाडु के एक टाइगर रिजर्व में रहने वाले कट्टूनायकन समुदाय के इस दंपति द्वारा वन्यजीवों के संरक्षण व पोषण का हृदयस्पर्शी चित्रण पूरी दुनिया को भाया है। पहले मिले रघु हाथी के बाद कई अन्य हाथी के बच्चों को अपने बच्चों की तरह पालकर इस दंपति ने नया जीवन दिया। उनके प्रयासों को पांच वर्ष तक देखने के बाद कार्तिकी गोंजाल्विस ने दो साल शूटिंग करके यह फिल्म बनायी। दरअसल, मनुष्य व जंगली जानवरों के रिश्तों को मार्मिकता के साथ प्रस्तुत करने के कारण यह एक उम्दा डॉक्यूमेंट्री बन पायी। निस्संदेह, फिल्म इंसान व जीवों के सह-अस्तित्व का महत्वपूर्ण संदेश देती है। यानी प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर ही विकास को सार्थक बनाया जा सकता है। फिल्म का निर्माण गुनीत मोंगा व अचिन जैन की कंपनी शिक्या एंटरटेनमेंट ने किया। पुरस्कार की खबर से बोम्मन व बेल्ली खुश तो हैं लेकिन दुख इस बात का है कि उनका रघु उनके साथ नहीं है। निःसंदेह, इन दोनों पुरस्कारों ने हर भारतीय को गर्व करने का एक अवसर प्रदान किया है।

हिंदी का वैश्विक आकाशदीप विलुप्त

डॉ. वेद प्रताप वैदिक एक ऐसा ब्रांड नेम बन गया था जो हिंदी के कई अखबारों में हर रोज़ सुर्खियां बटोर रहा था। उनकी अनुपस्थिति से अखबारों के उन क़ालमों की भरपाई निस्संदेह अन्य आलेखों से हो जाएगी मगर उनके अचानक देहावसान से पत्रकारिता और हिंदी जगत में जो रिक्तता पैदा हुई है उसकी भरपाई हो पाना आज तो नामुमकिन ही लगता है। हां, उनके अनेक उन पाठकों को भी वैदिक जी के क़ालम की कमी खटकेगी जिन्हें उनके चिंतन, उनकी शैली का स्वाद (ठेठ भाषा में कहें तो चस्का) पड़ चुका है।

उम्र के आठवें दशक में भी युवा पत्रकार की माफ़िक सक्रिय रहने वाले स्तंभकार डॉ वेद प्रताप वैदिक को हिंदी के लिये सड़क से लेकर संसद तक अभियान चलवाने व सफलता पाने के मानकों के तौर पर देखा जाता है। यह उनके ऋषि कर्म, उनकी गहन साधना का प्रताप ही था कि इस आयु में भी वह किसी बड़ी बीमारी से दूर थे। प्रतिदिन किसी नये मुद्दे पर गहरी समझ रखना, विदेशी मामलों पर त्वरित टिप्पणी करना उनकी दक्षता का अजूबा ही कहा जाएगा। दुनिया के अस्सी से ज्यादा देशों की यात्रा करने तथा अमेरिका, रूस व अफगानिस्तान में शोध करने वाले वैदिक के ज़ेहन में वैश्विक मसलों के प्रमाणिक तथ्य कूट-कूट कर भरे थे।

यूं तो वैदिक जी से कई मुलाकातें हुईं। दैनिक ट्रिब्यून में सम्पादक के रूप में पहली पारी में मेरा संवाद और सम्पर्क उनसे निरंतर होता रहा। नयी तकनीक के दौर में भी उनके हस्तलिखित आलेख भी मैंने सिर-माथे लिये और प्रमुखता से उन्हें प्रकाशित किया। एक मौक़े पर अपने एक परिचित लेखक की पुस्तक विमोचन के लिये मैंने उन्हें चंडीगढ़ बुलाया तो वे सहर्ष तैयार भी हुए। मुझे याद है कि सेक्टर-19 के मेरे घर भी वे आये। खाने-पीने के मामले में बेहद संयमित वैदिक जी ने सिर्फ फलाहार ही किया था। ऐसी तमाम यादें भूले नहीं भुलायी जातीं।

वास्तव में वैदिक जी की पत्रकारिता-यात्रा जीवन भर अध्ययन व संघर्ष में ही गुजरी। इंदौर में जन्मे और फिर दिल्ली को अपनी कर्मस्थली बनाने वाले वैदिक ने एक प्रूफ रीडर के रूप में अपनी पत्रकारिता की पारी शुरू की। फिर नवभारत टाइम्स में एक दशक से अधिक समय तक सहायक संपादक व संपादक (विचार) के रूप में काम करने के बाद पीटीआई की हिंदी सेवा 'भाषा' के संपादक हुए। वास्तव में वैदिक जी ने हिंदी पत्रकारिता को स्वाभिमान देकर उसे समृद्ध ही किया।

बेहद मुश्किलों के बीच जीवन की शुरुआत करने के बाद वैदिक उस ऊंचाई तक पहुंचे जहां शायद ही कोई दूसरा पहुंच पाये।

जब वे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में पीएचडी कर रहे थे तो विभाग ने अंतर्राष्ट्रीय मामलों में थीसिस हिंदी में लेने से मना कर दिया। उनसे कहा गया कि शोध प्रबंध अंग्रेजी में जमा करायें। वैदिक पीछे हटने को तैयार न थे। जेएनयू के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज डिपार्टमेंट ने उनकी स्कॉलरशिप रोक दी। फिर उनका संघर्ष शुरू हुआ और मामले की गूंज संसद के गलियारों तक पहुंची। तमाम राजनेता खासकर समाजवादी नेता उनके पक्ष में खड़े हुए। तब डॉ. राममनोहर लोहिया, मधु लिमये, आचार्य कृपलानी, अटल बिहारी वाजपेयी, चंद्रशेखर आदि नेताओं ने वेद प्रताप वैदिक के समर्थन में जोरदार ढंग से आवाज उठायी। वर्ष 1967-68 में संसद में खूब हंगामा हुआ। बाद में सरकार के हस्तक्षेप के बाद विश्वविद्यालय के नियमों में बदलाव हुआ। सही मायनों में वे देश में हिंदी आंदोलन का चेहरा बनकर उभरे। बताते चलें कि उन्होंने सिर्फ तेरह साल की उम्र में भी हिंदी के लिये सत्याग्रह किया था और जेल भी गये।

डॉ. वैदिक ने पिछले पांच दशक में हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिये कई आंदोलन चलाये। उन्होंने एक छोटी पत्रिका के जरिये भी हिंदी के स्वाभिमान की मुहिम चलायी। वे लोगों को समझाने में कामयाब हुए कि अपनी भाषा में किया गया काम बेहतर हो सकता है। अपनी किताब के जरिये तर्कों के साथ उन्होंने आम लोगों को यह बात समझाने का काम किया। उनका मानना था कि यदि पढ़ाई व नौकरी हिंदी में मिल रही होती तो देश में आरक्षण की जरूरत ही न रहती।

अंतर्राष्ट्रीय मामलों के जानकार के नाते उन्हें सम्मान के नजरिये से देखा जाता रहा है। यह बात दीगर है कि सभी राजनीतिक दलों से संबंध रखने तथा बेबाक तेवरों की वजह से लगभग सभी सरकारों ने उन्हें महत्वपूर्ण पद देने से परहेज किया। हालांकि, उनसे मिलने वाले मुख्यमंत्रियों व नेताओं की लाइन लगी होती थी। पी.वी. नरसिम्हाराव सरकार में उनकी गहरी पहुंच थी, मगर उन्होंने कोई अनुचित लाभ नहीं उठाया। वैसे वैदिक को लेकर कुछ विवाद भी सामने आये। साल 2014 में जब वैदिक पाकिस्तान गये तो वे मुंबई हमलों के मास्टर माइंड तथा लश्कर-ए-तैयबा के सर्वेसर्वा हाफिज सईद का इंटरव्यू लेने भी पहुंचे। जिस पर भारत में बवाल भी मचा। उनके खिलाफ मुहिम भी चली और कानूनी कार्रवाई करने की मांग की गई। हालांकि, बाद में उन्होंने स्पष्ट भी किया कि उनकी यह मुलाकात अचानक हुई, पहले से इसकी कोई योजना नहीं थी। वे कहते रहे कि वे सईद को भारत की जनता के विचारों से अवगत कराना चाहते थे।

उन्हें हिंदी व पत्रकारिता के लिये कई सम्मान भी मिले। हिंदी को मौलिक चिंतन की भाषा बनाने के लिये उन्हें देश में याद किया जाता रहेगा। वैसे वे हिंदी के अलावा फारसी, जर्मन, संस्कृत व रूसी भाषा के भी जानकार थे। शुरू में वे नरेंद्र मोदी के प्रशंसक भी थे लेकिन फिर उनका मोहभंग हो गया। सच्चाई तो यह है कि विदेश मामलों में उनके अनुभव का देश ने धरातल पर कोई ज्यादा लाभ नहीं उठाया। अफगानिस्तान व पाकिस्तान समेत दक्षिण एशिया के मामलों में उन्होंने जिस दक्षता से लिखा, वैसा किसी दूसरे के लिये शायद ही संभव हो।

नरेश कौशल

बहरहाल, जिन हालात में वैदिक जी का देहावसान हुआ, वह निश्चय ही दुखद है। हालांकि वह कुछ समय पहले पत्नी के निधन के बाद अकेलापन महसूस कर रहे थे मगर इसके बावजूद वह अपने ऋषि कर्म पर अडिग बने रहे। देश के सैकड़ों पत्रकारों के साथ वे दोस्ताना व्यवहार करते थे। विचारों की गंभीरता को उन्होंने अपने व्यवहार में हावी नहीं होने दिया। जीवन के अंतिम दौर में वह दक्षिण एशिया के देशों की जनता व भारत के लोगों के बीच संवाद के नये मौके तलाश रहे थे। इसके लिये उन्होंने जनदक्षेस मुहिम की शुरुआत भी की। एक बात तो साफ थी कि वे समाजवादियों व दक्षिणपंथियों में बराबर लोकप्रिय रहे। किसी व्यक्ति या दल से मतभेद के बाद भी संबंधों को सहज व सरल बनाने का गुण था उनमें। बहरहाल, हिंदी पत्रकारिता के क्षितिज पर एक बेबाक, निर्भीक, निष्पक्ष पत्रकार के रूप में उनकी छवि दैदिप्यमान रहेगी। ऐसी महान शख्सियत को हमारा विनम्र नमन!

सारी दुनिया में क्रिप्टो करेंसी ने मचाया बवाल

सनत जैन

आभासी मुद्रा क्रिप्टोकरंसी ने सारी दुनिया के देशों को एक बड़े संकट में डाल दिया है। टेक कंपनियों द्वारा क्रिप्टो करेंसी का जो माया जाल बुना था। उसने विश्व अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचाने में बहुत बड़ी भूमिका अदा की है। विकासशील देशों एवं दुनियाभर के सेंट्रल बैंकों ने इस आभासी मुद्रा के प्रचलन को लेकर जो मौन साधकर रखा, उसके दुष्परिणाम अब सामने दिखने लगे हैं। सिलिकॉन वैली से संचालित क्रिप्टो एक्सचेंज के बंद होने के बाद, क्रिप्टोकरंसी की सट्टेबाजी, वैध और अवैध रूप से मुद्रा का एक स्थान से दूसरे स्थान पर मुद्रा उपलब्ध होने से क्रिप्टो करेन्सी ने पिछले वर्षों में धूम मचाई। क्रिप्टो मुद्रा को शेयर बाजार में डिमांड और सप्लाई से कीमत बढ़ाकर मुनाफा कमाने का साधन बनी। क्रिप्टो करेंसी के लेनदेन के लिए नए-नए बैंक बने। उनके माध्यम से लेनदेन हुआ। क्रिप्टो एक्सचेंज को भारी झटका लगने के बाद अमेरिका का सिल्वर गेट बैंक, सिलिकॉन वैली और सिग्नेचर बैंक बंद हो गया। इनके बंद होने और क्रिप्टो एक्सचेंज एफटीएक्स बंद होने के बाद सारी दुनिया के शेयर बाजारों में भी अस्थिरता बनना शुरू हो गई थी।

दुनिया के देशों के सभी बड़े बैंकों ने क्रिप्टोकरंसी का कारोबार नहीं किया। ना ही क्रिप्टो करेन्सी को मान्यता दी। अब जब क्रिप्टो करेंसी से जुड़े हुए वित्तीय संस्थान डूब रहे हैं, उस समय कारोबार और बचत से जुड़ी हुई बहुत बड़ी रकम क्रिप्टो एक्सचेंज के माध्यम से निवेशकों की डूब गई है। इसका असर अब शेयर बाजार पर भी पड़ना शुरू हो गया है। इसका असर अन्य बैंकों पर भी निश्चित रूप से पड़ेगा। जिसके कारण सारी दुनिया की वित्तीय व्यवस्था को एक नया संकट पैदा होने लगा है।

कर्ज की अर्थव्यवस्था से दुनिया के सारे देश पहले से ही परेशान थे। सारी वित्तीय संस्थाओं को एनपीए जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। अब बैंकों को भी अपना अस्तित्व बचाए रखना मुश्किल हो रहा है। इसका असर शेयर बाजार में भी पढ़ रहा है। अब यह स्पष्ट रूप से दिखने लगा है कि सारी दुनिया के देश आर्थिक मंदी और आर्थिक संकट के शिकार होने जा रहे हैं।

आर्थिक मंदी के कारण पहले ही बेरोजगारी के संकट से दुनिया के सभी देश जूझ रहे हैं। महंगाई ने लोगों का जीवन दुश्वार कर दिया है। अब वित्तीय संस्थान यदि डूबते हैं, तो इससे पूरी दुनिया में हाहाकार मचना तय है। इतने बड़े संकट को लेकर सारी दुनिया के देश जिस तरह से चुप्पी साध कर बैठे हुए हैं। उससे चिंता होना स्वाभाविक है। अमेरिकी सरकार ने सिल्वर गेट बैंक, सिलिकॉन वैली और सिग्नेचर बैंक के डूबने पर कोई भी आर्थिक पैकेज देने से मना कर दिया है। अमेरिका जैसे देश की आर्थिक स्थिति इस तरह की नहीं है कि वह वित्तीय संस्थानों को कोई मदद दे सके। जिस तेजी के साथ शेयर बाजारों में इसका असर देखने को मिल रहा है। आने वाले कुछ ही दिनों में सारी दुनिया के देश आर्थिक मंदी के शिकार होने के साथ-साथ वित्तीय व्यवस्था के वर्तमान ढांचे को बचा पाना मुश्किल होगा। वित्तीय तंत्र से आम आदमी भी सीधा जुड़ा हुआ है। ऐसी स्थिति में दुनिया भर में अराजकता की स्थिति भी बन सकती है। विश्व बैंक और अन्य वित्तीय संस्थाओं को इस दिशा में गंभीरता के साथ समय रहते विचार करना होगा। यदि ऐसा नहीं हुआ तो आर्थिक मंदी, बेरोजगारी और महंगाई जैसी समस्याओं से सारी दुनिया के देशों को परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। वित्तीय अराजकता तीसरे विश्व युद्ध का कारण भी बन सकता है। इस पर विश्व बैंक एवं अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं को गंभीरता से विचार कर निर्णय लेना होगा।

बेगानी शादी में मुनाफे के दीवाने

भारत शादी प्रधान देश है, इसके धंधे भी शादी प्रधान हैं, सोना, कपड़े आदि का बड़ा कारोबार शादियों से है। बैंड-बाजा, होटल, रिसोर्ट, शराब वगैरह के धंधों का घणा ताल्लुक शादियों से है। इधर एक नया धंधा चल निकला है, प्री-वेडिंग शूट। इसमें दूल्हा-दुल्हन आपस में मिलकर उन हरकतों के फोटो खिंचाते हैं, जिन हरकतों की परमिशन पहले शादी के बाद होती थी, वो भी पब्लिक में नहीं। ऐसे कई बुजुर्ग मिलेंगे, जो यह कह सकते हैं कि जिस तरह की हरकतें करते युवा प्री-वेडिंग शूटिंग में दिखते हैं, वैसी हरकतें तो उन्होंने शादी के बाद भी नहीं कीं। वक्त वक्त की बातें हैं, अब सब कुछ प्री यानी पहले ही हो रहा है। अधर स्पर्श व आलिंगन ये सब प्री-वेडिंग शूट में करना सिर्फ अलाऊ ही नहीं होता, बल्कि इन्हें प्रमोट किया जाता है। जोड़ा शादी के बाद चैन से रहे, प्रेम से रहे, यह माना जाता है। फिर काहे इतनी जल्दी मची रहती है?

शायद खतरा होने लगा है कि क्या पता शादी के अगले ही दिन चकर-चकर शुरू हो जाये, प्यार-मोहब्बत का स्कोप बचे ही नहीं, इसलिए शादी से पहले ही लव वगैरह के फोटू खिंचा लिये जायें, क्या पता बाद में ऐसे मौके दिखे ही नहीं। प्री-वेडिंग शूटिंग चल निकली है। चिंताएं दूसरी भी हैं, कुछ दिनों बाद प्री-वेडिंग किड्स का चलन भी न शुरू हो जाये। तर्क यह दिया जा सकता है कि शादी के बाद ससुराल में बच्चे को पालना मुश्किल रहेगा, तो बच्चा मायके में पैदा हो तो बेहतर। बच्चे स्कूल वगैरह जाने लगें, तो शादी कर ली जाये, कुछ इस तरह का चलन भी शुरू हो ही जायेगा। प्री प्री प्री, सब कुछ पहले ही कर लिया जाये। इस देश के फोटोग्राफर बहुत चतुर-चालाक हैं। प्री-वेडिंग शूट के धंधे का उन्होंने ही आविष्कार किया है। अभी तो लड़का और लड़की ही प्री-वेडिंग शूटिंग के चक्कर में आते हैं। बहुत जल्दी ही सास और बहू का भी प्री-वेडिंग शूट संभव हो जायेगा। ताने मारती सास और और उससे दोगुनी स्पीड से ताने मारती बहू-ये फोटो भी जल्दी प्री-वेडिंग शूट के हिस्से बन सकते हैं। मुंह फुला कर बैठी सास और चीखती हुई बहू-ये भी प्री-वेडिंग शूट के हिस्से हो सकते हैं।

आलोक पुराणिक

एक फोटोग्राफर ने मुझे बताया कि शादी से थोड़े समय पहले बंदे और बंदियों की हालत अजब बेवकूफाना होती है, उनसे कुछ भी करवाया जा सकता है। शादी के बाद अक्ल पर पड़े ताले खुलने शुरू हो जाते, तब फोटोबाजी के तमाम चोंचलों पर उनसे खर्च न कराया जा सकता।

तमाम धंधों की नींव में बेवकूफी ही है जी।

अमेरिकी बैंक के दिवालिया होने के मायने

डॉ. सुरजीतसिंह

कैलिफोर्निया स्थित अमेरिका के 40 वर्ष पुराने और स्थापित सिलिकॉन वैली बैंक के दिवालिया होने के बाद सिल्वर गेट और सिग्नेचर बैंक भी डूब चुके हैं। इन बैंकों के दिवालिया होने के बाद उन सभी छोटे अमेरिकी बैंकों पर भी संकट के बादल मंडराने लगे हैं, जिनका व्यवसाय इन बैंकों के साथ जुड़ा हुआ है। अमेरिका के बैंकिंग सेक्टर की मुश्किलें बहुत बढ़ गई हैं। आर्थिक जगत के विद्वान अचंभित हैं। दुनियाभर के शेयर बाजार सहमे हुए हैं। बैंक के प्रदर्शन और क्रेडिट गुणवत्ता के आधार पर फरवरी, 2023 में सिलिकॉन वैली बैंक को फोर्ब्स ने 100 सर्वश्रेष्ठ बैंकों की वार्षिक सूची में शीर्ष 20 में स्थान दिया था। करीब 44 प्रतिशत तकनीकी और स्वास्थ्य क्षेत्र की कंपनियों के साथ कारोबार करने वाले इस बैंक के शेयर की कीमत डॉलर से भी अधिक थी। कुल 210 अरब डॉलर का कारोबार एवं 175.4 अरब डॉलर (दिसंबर, 2022 में) की जमापूंजी वाला सिलिकॉन वैली बैंक अर्श से फर्श पर है। आखिर ऐसा क्या हुआ कि दुनियाभर के तकनीकी आधारित नये स्टार्टअप्स को वित्तीय सहारा देने वाला सिलिकॉन वैली बैंक डूब गया? कुछ विद्वानों ने आशंका व्यक्त की कि 2008 में आ चुकी मंदी पुनः खुद को दोहराएगी। जमाकर्ताओं की बड़ी धनराशि डूबने का असर होगा कि ये कंपनियां अपने कर्मचारियों को उनका वेतन नहीं दे पाएंगी, जिससे लोगों की नौकरी चली जायेगी।

अमेरिका सहित विश्व के वित्तीय बाजार में स्थितियां और अधिक खराब होने से बचाने के लिए अमेरिका के केन्द्रीय फेडरल बैंक ने जमाकर्ताओं को विश्वास दिलाया है कि उनकी जमापूंजी सुरक्षित रहेगी।

यह समझना महत्वपूर्ण होगा कि आखिर यह बैंक डूबा क्यों? बैंक हमेशा लेन-देन पर चलता है। जब बैंक अपने ऋणों पर तो दो से तीन प्रतिशत ब्याज लेगा और अपने जमाकर्ताओं को 5 प्रतिशत ब्याज का भुगतान करेगा तो वह बैंक असफल होगा ही। कुछ ऐसी स्थितियां सिलिकॉन वैली बैंक के साथ हुई। बढ़ती महंगाई रोकने को फेडरल बैंक ने बीते कई महीनों से ब्याज दरों को बढ़ाना शुरू कर दिया था। ब्याज दरों में निरंतर वृद्धि का दोहरा प्रभाव हुआ। पहला, निवेशकों विशेष रूप से स्टार्टअप्स का व्यवसाय के प्रति आकर्षण कम होने लगा। पिछले 12 से 15 महीनों में आसमान छूती महंगाई दरों के बीच स्टार्टअप्स की तेजी में गिरावट होने लगी। जिसका प्रभाव सिलिकॉन वैली बैंक के व्यवसाय पर भी पड़ने लगा। ऋण वापसी की दर बहुत कम हो गई। दूसरी ओर, कोरोना उपरांत परिस्थितियों में अपने को बाजार में बनाए रखने के लिए स्टार्टअप्स कंपनियों ने बैंक से अपनी जमा पूंजी निकालनी शुरू कर दी। पैसा लौटाने को सिलिकॉन वैली बैंक को अपने बांड बेचने पड़े। फाइनेंशियल टाइम्स के अनुसार बैंक के 91 अरब डॉलर के बांड्स की कीमतों में करीब 15 अरब डॉलर की गिरावट आ गई। जब बैंक अपनी सबसे सुरक्षित संपत्ति नुकसान में बेचता है, तो इसका अर्थ है कि वह नगदी संकट का सामना कर रहा है। जिसका दुष्परिणाम सिलिकॉन वैली बैंक दिवालिया होने के रूप में सामने है।

अमेरिका के 16वें सबसे बड़े सिलिकॉन वैली बैंक के दिवालिया होने का असर 92 से अधिक उन भारतीय स्टार्टअप्स पर भी होगा, जिनका खाता इस बैंक में है। इस बैंक का एक ऑफिस बंगलौर में भी है जो स्टार्टअप्स व्यवसाय को बढ़ाने के लिए अपने यहां खाता खोलने को प्रेरित करता था। यह बैंक अपनी लचीली कार्यप्रणाली के चलते दुनियाभर के स्टार्टअप्स के लिए सबसे पसंदीदा विकल्पों में से एक है। यही कारण है कि सिलिकॉन वैली में हर तीसरा स्टार्ट-अप भारतीय अमेरिकियों का रहा है। भारत में बढ़ने वाले यूनीकार्न की संख्या में इस बैंक का भी बड़ा योगदान रहा है। अनुमान के अनुसार पिछले अक्तूबर में भारतीय स्टार्टअप्स ने 150 मिलियन डॉलर पूंजी जुटाई थी। मौजूदा परिस्थितियों ने ब्ल्यूस्टोन, नापतोल, कार वाले, शादी, इनमोबी, लॉयल्टी रिवाड्र्ज आदि स्टार्टअप्स के मन में अनिश्चितता भाव बढ़ा दिया।

सिलिकॉन वैली बैंक के असफल होने से भारत के स्टार्टअप्स का वर्तमान और भविष्य भी मुश्किल में है। सरकार इन स्टार्टअप्स को बचाने को इनके साथ खड़ी है, जिससे भविष्य में हालात के बिगड़ने पर स्थिति को संभाला जा सके। सूचना और प्रौद्योगिकी केन्द्रीय राज्य मंत्री राजीव चंद्र शेखर ने ट्वीट में कहा कि स्टार्टअप भारतीय अर्थव्यवस्था का जरूरी हिस्सा हैं। उनसे जानने का प्रयास किया जाएगा कि सरकार उनकी मदद कैसे कर सकती है। वहीं भारत सरकार और आरबीआई को मंथन करना होगा कि आखिर भारतीय स्टार्टअप्स देश के बाहर के बैंकों की तरफ रुख क्यों करते हैं? क्या इनको अपनी बैंकिंग व्यवस्था से नहीं जोड़ सकते हैं?

भारत की दृढ़ बैंकिंग व्यवस्था एवं आरबीआई द्वारा विनियमित होने के कारण सिलिकॉन वैली बैंक के दिवालिया होने का भारतीय बैंकों पर कोई गहरा प्रभाव नहीं पड़ेगा। भारत में एनपीए स्तर भारत में एनपीए स्तर नियंत्रण में है। महंगाई नियंत्रित करने के लिए आज आरबीआई की लचीली मौद्रिक नीति की प्रशंसा की जा रही है।

सिलिकॉन वैली बैंक एवं अन्य अमेरिकी बैंकों के असफल होने से 2008 की तरह मंदी के आने की संभावनाएं बहुत ही कमजोर हैं। क्योंकि 2008 की तुलना में आज विश्व बेहतर आर्थिक स्थिति में है। फेडरल बैंक का निरंतर प्रयास रहेगा कि अतिशीघ्र इस वित्तीय संकट को सुलझाया जाए। जिससे उसकी उपस्थिति आर्थिक शक्ति के रूप में बनी रहे। इसके बावजूद यह एक वैश्विक वित्तीय संक्रमण है, जिसके लिए भारत के नीति-निर्माताओं को सतर्क रहना होगा।

भ्रष्टाचार उजागर होने पर बोखलाए बाबुलाल ने पत्रकार के विरूद्ध दर्ज करवाई एफआईआर

माही की गूंज, शाजापुर। अजय राज केवट

वर्तमान समय मे कानून के दुरुपयोग करने का मानो चलन सा हो गया है। जिसमे आम जनता तो थी लेकिन पत्रकारों पर भी एक से बढ़कर एक झुटे मुकदमे मढ़ने से भी भ्रष्टाचारी जनप्रतिनिधि बाज नही आ रहे है। जो पहले तो जनता के विकास के लिए आने वाले जनहित के पैसों को अपना हक समझकर इस तरह डकारते है व व्यर्थ करते है कि जैसे अपना ही माल हो। जबकि वह राशि उन्ही गरीब जनता की गाड़ी कमाई की होती है जो दिन रात मेहनत करके टेक्स के रूप में सरकार तक पहुचाती है।

ऐसा ही नया मामला जनपद शुजालपुर के अंतर्गत ग्राम पंचायत मगरानिया में देखने को मिल रहा है। जिसमे सरपंच प्रतिनिधि के भ्रष्टाचार संबंधित काले कारनामो को पत्रकारों द्वारा प्रमुखता से उठाकर जनता के सामने लाने पर सरपंच प्रतिनिधि बाबुलाल मालवीय बोखला गया। जिसके बाद सरपंच प्रतिनिधि बाबुलाल मालवीय ने खिसयानी बिल्ली घम्बा नोचे की कहावत को अपने अंदर चरितार्थ करके पहले तो तुरंत थाने की तरफ दौड़ लगाई और मनघडंत बातों को सुना कर झूटी एफ आई आर पत्रकार के विरुद्ध दर्ज करवा दी। जबकि सारा मामला भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ था। जिसमे साहब द्वारा बिना जीएसटी के फर्जी बिलो को

लगा लगा कर लगातार भ्रष्टाचार की ऐसी चकरी चलाई की मानो ग्राम पंचायत में रहने वाली जनता भी मुह ताकती रह गईं। साहब ने सीसी रोड में आने वाले मटेरियल को कहीं अन्य जगह इस्तेमाल कर लिया, जो आज भी जांच का विषय बना हुआ है। सारे ग्रामवासियो की नज़र में आज भी वही विषय खटक रहा है कि, हमारे द्वारा दिये गए वोटो से सरपंच बनी गंगाबाई मालवीय विकास का मुद्दा छोड़कर कही दूसरे पथ पर अग्रसर हो गई है ओर फर्जी बिलो की आड़ में शासन तक को धोखा दे रही है।

क्या सरपंच प्रतिनिधि बाबुलाल मालवीय कर रहा है सारा कांड...?

'खिसयानी बिल्ली घम्बा नोचे' कहावत मालवांचल क्षेत्र में कई वर्षो से विख्यात है। जिसमे पहले तो व्यक्ति सारा कर्म कांड कर लेता है और जब किया गया कार्य सिद्ध न होने पर सारा पाप दोष दूसरे व्यक्ति के सिर पर मड देता है और यही सारे कार्य सिद्धि का अनुशरण आजकल सरपंच प्रतिनधि बाबुलाल मालवीय पर सटीक बैठ रहा है। क्योकि साहब पहले तो सरकार द्वारा विस्तारणवृत विभिन्न योजनाओं को लागू करके पहले तो ग्रामवासियो को बहकाता है, फिर उन्ही शासकीय योजनाओं में अपने आर्थिक घरेलू स्थिति सुधारक यंत्रो को ढूंढता है। जिससे कि लोगो के विकास को छोड़कर अपने ही आर्थिक तंत्र को सुधारा जा सके ओर यह सारा ही भ्रष्टाचार का विस्तारवाद इसी सरपंच गंगाबाई व प्रतिनिधि बाबुलाल मालवीय द्वारा विगत महीनों से ही किया जा रहा है।

जो गोमाता पालता हो उसे ही चुनाव लड़ने का अधिकार हो

सरकारी कर्मचारियों के वेतन से प्रतिमाह 500 रुपए गोसेवा के लिए काटे जाए- मंत्री हरदीपसिंह डंग

माही की गूंज, रतलाम/ जावरा।

चुनाव लड़ने से जीतने तक के लिये तो टोने टोटको का उपयोग होता है। लेकिन चुनाव के पहले ही नेता अपने टिप्स देकर अपनी योग्यता साबित करने से लगे हैं। ऐसे ही एक कुछ टिप्स देने में मंत्री हरदीपसिंह डंग ने देर नहीं कि और गोभक्त से लेकर गोपालक तक बनने की सलाह अपनी सरकार को दे डाली। दरअसल ये चुनावी साल है और हर नेता जनता को रिझाने के लिए कुछ न कुछ ऐसा कह रहा है जिससे जनता उसकी तरफ आकर्षित हो। फिर ऐसे नेताओं में राज्य सरकार जे मंत्री ही क्यो न हो।

मध्य सरकार के केबिनेट मंत्री हरदीपसिंह डंग ने हिंदुत्व के मुद्दे पर अपनी छवी निखारने चमकने वाली मांग विधानसभा में रखी है। और अपनी मांगों को विधानसभा में रखने की बात खुद मंत्रीजी ने रविवार को एक कार्यक्रम में अपने भाषण में बताई। मंत्री हरदीपसिंह डंग की यह मांग गोमाता के लिए है। जिसमे उन्होंने प्रदेश में गोमाता की स्थति को देखते हुए कहा कि, जिन शासकीय कर्मचारियो का वेतन 25 हजार रुपए प्रतिमाह से अधिक हो उनसे 500 रुपए प्रतिमाह गोशाला में जमा करवाया जाए। मंत्रिजी की दूसरी मांग है कि, जो कृषक है वो अगर गो माता पालता है उसका क्रय-विक्रय किया जाए, नही तो जो नही गो माता नही पाल रहे उनके क्रय विक्रय बन्द किया जाए। मंत्री डंग ने अपनी तीसरी मांग में कहा कि, ओर मेरे जैसे नेता चाहै सरपंच हो, जनपद हो, या पार्षद हो, या विधायक, सांसद या कोई मंत्री हो जो गो माता पालता हो उसे ही चुनाव लड़ने का अधिकार हो नही तो उसका फार्म रिजेक्ट कर दिया जाए।

रतलाम जिले के जावरा तहसील के सेमलिया पहाड़ी पर रविवार को आयोजित एक कार्यक्रम में मध्यप्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री हरदीप सिंह डंग ने अपनी यह मांगो के बारे में भाषण में मौजूद लोगों को बताया। मंत्री डंग का यह भाषण का वीडियो अब सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है। मंत्री जी के इस बयान से हो सरकारी कर्मचारी नाराज भी हो सकते है। क्यो की हर कर्मचारी 500 रुपये देने को तैयार न हो और अगर जबरदस्ती काटे गए तो उनमें सरकार के प्रति नाराजी रहेगी। ओर यह नाराजी सरकार को आगामी विधानसभा चुनाव में कही भारी भी पड़ सकती है। इसलिए ऐसी संभावना कम ही है कि राज्य सरकार अपने कर्मचारियों पर इस तरह का कोई आर्थिक भार अभी डालेगीं।

जिन आउटसोर्स कर्मचारियों ने सरकार को दिलवाया अवार्ड उनको दिखा दिया बाहर का रास्ता

माही की गूंज, मंदसौर।

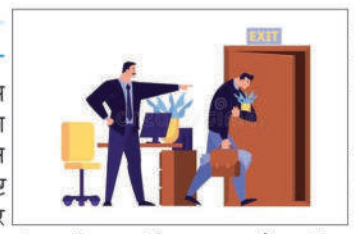

केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा नई दिल्ली में पोषण अभियान 2018-19 की तीन श्रेणियों में मध्यप्रदेश को उत्कृष्ट गतिविधियों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए गए थे। केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री स्मृति जुबिन ईरानी ने राज्य के महिला एवं बाल विकास विभाग के प्रधान सचिव अनुपम राजन को पुरस्कार प्रदान किया था, यह बात सबको पता है। मगर इस पुरस्कार को दिलाने के लिए जिस पोषण अभियान के कर्मचारियों ने मेहनत की थी उन लोगो को शिवराज सरकार ने बेरोजगार कर दिया है।

आपको बता दें, कोरोना काल के दौरान कई आउटसोर्सिंग कर्मचारियों को बेरोजगार कर दिया था जिनमे से एक मधयप्रदेश के पोषण अभियान के कर्मचारियों भी थे। या यू कहे जिन्हे शिवराज सरकार बनते ही बाहर कर दिया था व नए टेंडर के लिए लगातार आश्वासन दिया जा रहा था। परंतु चुनाव के करीब आते ही टेंडर तो किया मगर पुराने अनुभवी लोगों को दूर कर मलाई बाटने वालो को प्राथमिकता दे दी गई, टी एन्ड एम कंपनी द्वारा मांगे गए अनुभव और योग्यता में नही आने के बाद भी कंपनी ने अपना निजी स्वार्थ देखते हुए उनकी भर्ती कर दी गई। जिस कार्य में जहा टेक्निकल नॉलेज की जरूरत हे वहा कई लोग तो ऐसे भी भर्ती कर लिए गए जिन्हे ईमेल आईडी तक बनना नही आती। और सबसे शानदार तो ये हुआ की मधयप्रदेश के अंदर राजस्थान के व्यक्तियों को भर्ती में प्राथमिकता दी गई।

पोषण अभियान के पूर्व कर्मचारियों का कहना है कि, आगामी चुनाव में भी मामाजी राजस्थान के लोगो से ही वोट लेंगे। 2016 से कार्यरत और अनुभवी लोगो को बाहर का रास्ता दिखा नए लोगों को रखना ये सब जाहिर करता है। की सरकार प्रशिक्षण के नाम से सरकारी पैसे का कैसे दुरुपयोग करने वाली हे। राजनीति में जहा अनुभव मायने रखता है। वहा योजनाओं या भर्ती में भी पैसे और पॉवर की जगह अनुभव को प्राथमिकता दी जाना चाइये। जानकारी के अनुसार इस भर्ती के दौरान एग्जाम और इंटरव्यू में पास होने के बाद भी पुराने अनुभवी लोगों को नहीं लिया गया। वही इस भर्ती के दौरान दलालों ने जमकर मलाई खाई मलाई के चक्कर में कई परियोजना में ऐसे लोग भी भर्ती कर दिए जिनके होने नही होने का कोई ओचित्य नही है। वही कई उच्च कर्मचारियों के करीबी भी अपने रसूख के चलते स्थान पा लिए और 2016 से 2020 तक मेहनत करने वाले लोगो व उसके बाद लगातार आश्वासन पाने वालो को 2022 में पता लग गया की प्रदेश को अवार्ड दिलाने के लिए की गई मेंहनत, प्रदेश की सरकार के लिए कोई मायने नहीं रखती। 2016 से कार्यरत कर्मचारियों को 15 महीने की कांग्रेस के शासन में मिला था प्रमोशन भाजपा शासन में बिल्कुल बाहर कर दिया।

सर्राफा व्यापारी को लूटने वाले पुलिस की पकड़ में, झाबुआ जिले से जुड़े लूट के तार

लुटेरे का संबंध इंटर स्टेट गैंग से, राजस्थान और गुजरात में दिया बड़ी घटना को अंजाम

माही की गूंज, रतलाम।

कुछ दिन पूर्व नामली के सर्राफा व्यापारी को लट्ठमार कर लूट लिया था। पुलिस ने इस मामले में 3 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है जिनमें से दो झाबुआ के हैं वही एक रावटी क्षेत्र का है। लुटेरे का संबंध इंटरस्टेट गैंग से है। जिसने गुजरात के सूरत में 6 करोड़ से अधिक की डकैती की थी। पुलिस ने आरोपियों से पूछताछ की तो उन्होंने अपना गुनाह कबूल कर लिया आरोपियों के कब्जे से कुछ जेवर और नकदी बरामद किए गए हैं। मामले में चार आरोपी फरार है, जिनकी तलाश की जा रही है। आरोपियों को पकड़ने वाले पुलिस दल को 10 हजार रुपए का नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाएगा।

नवीन कंट्रोल रूम पर आयोजित प्रेस वार्ता में पुलिस अधीक्षक अभिषेक तिवारी ने बताया कि, 27 फरवरी की शाम को रावटी क्षेत्र में नामली निवासी सर्राफा व्यापारी सत्यनारायण सोनी शाम को आ रहे थे, तब लुटेरों ने हमला कर दिया था। उनके कब्जे से जेवर और करीब डेढ़ लाख नगद लूट लिए थे। इस घटना में व्यापारी के सिर में चोट भी आई। लूट की घटना के मद्देनजर दल बनाकर आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए दबिश दी गई। मुखबिर से मिली सूचना के बाद तीन आरोपी पुलिस की पकड़ में आए हैं। आरोपियों को पकड़ने के दौरान पुलिस को काफी मशक्कत करना पड़ी। आरोपियों ने पुलिस बल पर हमला भी किया।

इंटर स्टेट गैंग का है लुटेरा मुख्य आरोपी रमेश

मुख्य आरोपी रमेश पिता रामचंद्र वसुनिया छलकिया थाना कोतवाली झाबुआ का निवासी है, जिसके नाम कई अपराध दर्ज हैं। विशेष रूप से सूरत जिले के कोसंबा में 2010 में आरोपी ने साथियों के साथ करीब 6 करोड़ 35 लाख रुपए के आभूषण की डकैती की थी। इसके अलावा राजस्थान के बारां जिले में आरोपी ने पेट्रोल पंप पर लूट की। दो अन्य आरोपी दिनेश पिता झितरा गुंडिया (23) निवासी नेगड़िया थाना कल्याणपुर जिला झाबुआ और देवी सिंह पिता रामचंद्र चरपोटा (38) निवासी आड़ापथ थाना रावटी है। आरोपी से पूछताछ की जा रही है।

चार आरोपी है फरार

लूट कांड को अंजाम देने वाले चार आरोपी फरार हैं। जिसमें सोहन पिता हीरालाल खाट कछला वसुंधरा थाना रावटी निवासी है। वही मुन्ना पिता मान सिंह गुड़िया निवासी कल्याणपुरा झाबुआ का है। इसके साथ दो अन्य आरोपी फरार हैं।

आरोपी के कब्जे से यह किया पुलिस ने जप्त

पुलिस अधीक्षक ने बताया कि, गिरफ्तार आरोपियों के कब्जे से चांदी के दो कड़े जिनकी कीमत 35 हजार, चांदी के दो पायजेब कीमत 5 हजार, नगद राशि 70 हजार, घटना में प्रयुक्त बिना नंबर की पल्सर मोटरसाइकिल एवं एक डीलक्स मोटरसाइकिल कीमत एक लाख 50 हजार, एक विवो कंपनी का मोबाइल जिसकी कीमत करीब 20 हजार रुपए है सभी जब्त किए हैं।

21 मार्च को आयोजित होगा रक्तदान शिविर, विभिन्न संगठनों से कलेक्टर ने की चर्चा

माही की गूंज, शाजापुर।

शहीद भगतसिंह, सुखदेव थापर एवं शिवराम हरी राजगुरू के बलिदान दिवस 23 मार्च के उपलक्ष्य में 21 मार्च को जिले में 22 स्थानों पर लगाए जाने वाले महा रक्तदान शिविरों में अधिक से अधिक लोग रक्तदान करें, इसके लिए कलेक्टर दिनेश जैन ने विभिन्न संगठनों के पदाधिकारियों से चर्चा की। इस मौके पर जिला पंचायत अध्यक्ष हेमराजसिंह सिसोदिया, नगरपालिका उपाध्यक्ष संतोष जोशी, जिला पंचायत सदस्य जगदीश फौजी सहित विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी मौजूद थे।

कलेक्टर ने सभी पदाधिकारियों से कहा कि, शहीदों द्वारा देश के लिए दिये गये बलिदान की स्मृति में हम सभी आगे आकर लोगों के जीवन को बचाने के लिए रक्तदान करें। रक्तदान के लिए महिला एवं पुरूषों को आगे आना चाहिये। लोगों का जीवन बचाकर भी हम देश सेवा कर सकते हैं। शाजापुर जिले ने विगत 2 वर्षों से रक्तदान में रिकार्ड बनाया है, इसे देखते हुए अब शाजापुर की पहचान रक्तदान के लिए होने लगी है। रक्तदाताओं ने रक्तदान कर शाजापुर का नाम रोशन किया है। कलेक्टर ने कहा कि सभी संगठनों के पदाधिकारी रक्तदान के इच्छुक लोगों की सूची बनाएं तथा उन्हें रक्तदान शिविर स्थल तक ट्रेक करें। जिन स्थानों पर शिविर लगाए जा रहे हैं, उनके आसपास के ग्रामों से भी रक्तदान के इच्छुक लोगों को लाने एवं ले जाने के लिए वाहन की व्यवस्था की जा रही है। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष सिसोदिया ने भी कहा कि कोई भी कार्यक्रम या अभियान तब ही सफल होता है, जब निर्धारित लक्ष्य पूरे हो। लक्ष्य प्राप्ति के लिए सभी लोग जुड़ जाएं और अधिक से अधिक लोगों को रक्तदान के लिए प्रेरित करें। अनुविभागीय अधिकारी नरेन्द्र नाथ पाण्डेय ने सुझाव दिया कि, विगत वर्ष के रक्तदाताओं को अपने साथ एक-एक अन्य व्यक्ति लाने के लिए प्रेरित करें तो भी हमारा लक्ष्य पूरा हो सकता है। नगरपालिका उपाध्यक्ष जोशी ने कहा कि, रक्तदान के लिए वे अधिक से अधिक लोगों को जोड़ेंगे। साथ ही जिला चिकित्सालय के शिविर में अपनी ओर से वे रक्तदाताओं के नाश्तें का प्रबंध करेंगे।

प्रेस क्लब की ओर से आए मनीष सिसोदिया ने भी कहा कि, रक्तदान के लिए लोगों को प्रेरित करने के उद्देश्य से उनकी ओर से व्यापक प्रचार-प्रसार किया जायेगा। इस मौके पर बीकेएसएन महाविद्यालय के जनभागीदारी समिति के अध्यक्ष विपुल कसेरा ने भी महाविद्यालय में रक्त संग्रहण के लिए अधिक संख्या में दल लगाने के लिए कहा। इस मौके पर अन्य संगठनों के पदाधिकारियों ने भी अपनी ओर से किये जाने वाले प्रयासों की जानकारी दी।

इस अवसर पर डॉ. एसडी जायसवाल, आशीष नागर, पत्रकार मनोज पुरोहित, दीपक चौहान, कर्मचारी संगठन की ओर से रघुवीरसिंह पंवार, हरिओम गोठी, गौरव सोनी, मकबूल वारसी, भोजराम पंवार, प्रदीप कुमार वैद्य, शेलेन्द्र श्रीवास्तव, संजय शिवहरे सहित विभिन्न संगठनों के पदाधिकारीगण भी उपस्थित थे।

गांधीसागर अभयारण्य में पाई गई पक्षियों की 215 से अधिक प्रजातियां

ब्लैक बेलीड टर्न, ब्लैक विंगड, ऐशी वुड श्वालों, ईगल जैसी युनिक प्रजाति मिली

माही की गूंज, मंदसौर।

जिले के गांधीसागर अभयारण्य में तीन दिवसीय बर्ड सर्वे रविवार को पूरा हुआ। देशभर के 7 राज्यों से पहुंचे विशेषज्ञों ने यहां तैयार किए गए अलग-अलग रुट पर पक्षियों को लेकर सर्वे किया। इनके साथ स्थानीय अमले के साथ रुट पर बर्ड सर्वे में भाग लिया। विशेषज्ञों ने अपनी रिपोर्ट में गांधीसागर अभयारण्य को पक्षियों के लिए अनुकूल बताया। यहां कई विलुप्त होती प्रजातियों के पक्षी भी पाए गए। हालांकि गत वर्ष सर्वे में जहां 250 से अधिक प्रजातियां यहां पाई गई थी। वहीं इस बार प्रारंभिक रिपोर्ट में सिर्फ 215 पक्षियों की प्रजातियां ही आई है। लेकिन इसके पीछे विशेषज्ञों ने तर्क दिया कि जो राष्ट्रीय स्तर के अभयारण्य है उनमें भी इस बार कम है। अक्टूबर तक बारिश होती रही इसलिए सभी जगहों पर मौसम पक्षियों के अनुकूल होने के साथ पानी की उपलब्धता है। इसलिए यहां कम पक्षी इस बार पहुंचे है। गांधीसागर में हुए बर्ड सर्वे की अभी एक सप्ताह में वास्तविक रिपोर्ट तैयार होगी।

विभागीय अधिकारियों ने बताया कि, देश में गुम होती प्रजातियों के पक्षी जब विशेषज्ञों को यहां दिखे तो वह रोमांचित हो गए। अब फोटो के आधार पर अध्ययन किया जाएगा। गांधीसागर में बर्ड सर्वे में देशभर की राष्ट्रीय स्तर के अभयारण्य क्षेत्र से भी विशेषज्ञ पहुंच रहे है और रुचि ले रहे है।

ब्लैक बेलीड टर्न, ब्लैक विंगड, ऐशी वुड श्वालों, ईगल जैसी युनिक प्रजाति मिली

रविवार को तीन दिवसीय गांधीसागर बर्ड सर्वे का समापन हुआ। सुबह की ट्रैल के बाद रामपुरा पठार स्थित विश्रामगृह में समापन हुआ। सभी ट्रैलस् के तीन दिनों का डाटा को संकलित कर तकरीबन 215 प्रजातीय मिली। इसमें ऐशी वुड स्वालो, ब्लैक बेलीड टर्न, ब्लैक विंगड कुक्कूश्राईक, ग्रेटर स्पाटेड ईगल जैसे यूनिक प्रजाति देखने को मिली। डब्ल्यूसीटी, डबल्यूडबल्यूएफ, वाइल्ड वारियर्स इंदौर के एक्सपर्टस् इस बर्ड सर्वे की विश्लेषण रिपोर्ट अभ्यारण को देगे। पिछली बार की तुलना में इस बार मिग्रेटरी बर्ड्स कम देखने को मिली।

डबल्यूडबल्यूएफ की तरफ से आए भरतपुर बर्ड सेंचुरी के 6 एक्सपर्टस् ने बताया, इस वर्ष माइग्रेशन कम देखने को मिला है जिसका कारण लंबी अवधि तक चली बारिश का होना बताया जा रहा है। बर्ड सर्वे के समापन में प्रमाण पत्र वितरण के बाद 7 राज्यों से आए बर्डस् अपने-अपने प्रांतों के लिए रवाना हुए। विशेषज्ञों ने माना कि गांधीसागर में ऊष्णकटिबंधीय शुष्क मिश्रित पर्णपाती वन, शुष्क पर्णपाती, घास के मैदान के साथ-साथ नदी की घाटियों में घना वन क्षेत्र भी है जिस वजह से विभिन्न प्रकार की पक्षी प्रजातीय यहां देखने को मिलती है।

7 राज्यों से आए 56 विशेषज्ञों ने तीन दिन तक किया बर्ड सर्व

गांधीसागर अभयारण्य में तीन दिवसीय पक्षी गणना रविवार को पूरी हुई। देश के विभिन्न 7 राज्यों से आए 56 विशेषज्ञों ने सर्वे किया। सुबह 6 बजे से 10 बजे तक व शाम को 4 बजे से 7 बजे तक बनाए गए 23 से अधिक रुट पर दो पारियों में ई एप के जरीए सर्वे किया गया और उनकी प्रजातियों के बारें में अध्ययन किया गया। इसमें 215 विभिन्न प्रजातियों के पक्षियों की गणना की गई है। जबकि मार्च 2022 में हुई गणना में 250 तो फरवरी 2021 में की गई गणना मे 236 प्रजाति पक्षियों की गणना की गई थी। प्रदेश के अलावा राजस्थान, छत्तीसगढ़, कलकत्ता के अलावा अन्य राज्यों से विशेषज्ञ आए थे।

215 पक्षियों की प्रजाती, अभी एक सप्ताह में आएगी वास्तवितक रिपोर्ट

गांधीसागर में चल रहे इस बर्ड सर्वे में विशेषज्ञों के अलावा स्थानीय स्तर के वनविभाग के स्टॉफ ने चयनीत एव निर्धारित रूट पर सर्वे कार्य किया है। अभी गणना में 215 प्रजाति के पक्षियो की गणना के आंकडे सामने आए है। लेकिन एक सप्ताह में वास्तविक गणना रिपोर्ट इनके द्वारा तैयार कर दी जाएगी। इसमें पक्षियों की प्रजाति के अनुसार उनकी संख्या भी होगी। साथ ही विलुप्त प्रजाति का भी इसमें जानकारी दी जाएगी। तीन दिनों तक चल सर्वे में गणना के अलावा अभयारण्य में पक्षियों के अनुकूल माहौल बनाने के लिए जरुरतों को भी देखा गया। रिपोर्ट के आधार पर इस पर काम होगा।

इसलिए वास्तविक रिपोर्ट में लगेगा एक सप्ताह का समय

पहले दिन टीमें यहां पहुंची और टीमों को रुट के अनुसार काम बांटा। दो दिनों तक सर्वे हुआ और रविवार को समापन हुआ। ई-एप के जरीए भी गणना हुई लेकिन अब फोटो के आधार पर विशेषज्ञों की टीम बैठेगी और उन पर मंथन करेगी। कई बार एक ही प्रजाति के पक्षी के अधिक फोटो भी आ जाते है। उनके चिन्ह और पहचान के आधार पर रिपोर्ट तैयार होती है। इसमें एक सप्ताह का समय लगेगा। विशेषज्ञों ने अपनी रिपोर्ट में पक्षियों के लिए गांधीसागर को अनुकूल बताया है। ओर यहां दुर्लभ प्रजातियों के पक्षी भी सामने आए है।

हाईकोर्ट से गुहार के बाद अब नगर निगम के अधिकारी सूचनाएं मुहैया कराने को हुए राजी

पूर्व विधायक पारस सकलेचा लगातार उठा रहे हैं सीवरेज प्रोजेक्ट में भ्रष्टाचार का मामला

माही की गूंज, रतलाम।

देश और प्रदेश में सूचना का अधिकार अधिनियम लागू होने के बावजूद नगर निगम जैसे शासकीय विभाग इस कानून की धज्जियां उडाने पर आमादा रहते है। रतलाम में चल रहे सीवरेज प्रोजेक्ट की गडबिडयों को उजागर करने के लिए नगर निगम से मांगी गई जानकारियों को लगाचार पांच साल तक टाला गया। फिर जब आवेदक ने हाईकोर्ट से गुहार लगाई तब कहीं जाकर नगर निगम के अधिकारी सूचनाएं मुहैय्या कराने को राजी हुए। मामला 2017 का है। रतलाम में उटपटांग तरीके से चलए जा रहे सीवरेज प्रोजेक्ट की गडबडियों को उजागर करने के लिए अभिभाषक कपिल मजावदिया ने नगर निगम से सूचना का अधिकार अधिनियम के तहत सूचनाएं मांगी थी। एडवोकेट श्री मजावदिया ने 20 सितम्बर 2017 को सूचना के अधिकार के तहत आवेदन प्रस्तुत कर नगर निगम से सीवरेज प्रोजेक्ट से सम्बन्धित अभिलेख मुहैया कराने का निवेदन किया था। नगर निगम के लोक सूचना अधिकारी ने इस आवेदन पर निर्धारित समय सीमा के भीतर कोई कार्यवाही नहीं की। इससे व्यथित होकर मजावदिया ने प्रथम अपील नगर निगम के अपीलीय अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत की। नगर निगम के अपीलीय अधिकारी ने भी निर्धारित समय सीमा में इस अपील का निराकरण नहीं किया। इससे व्यथित एडवोकेट मजावदिया ने राज्य सूचना आयोग के समक्ष द्वितीय अपील प्रस्तुत की। राज्य सूचना आयोग ने द्वितीय अपील का निराकरण 19 अगस्त 2019 को किया। राज्य सूचना आयुक्त डा. जी कृष्णमूर्ति ने 19 अगस्त 2019 को पारित अपने आदेश में आपीलार्थी एडवोकेट कपिल मजावदिया को निर्देश दिया कि वह 15 दिनों के भीतर नगर निगम के लोक प्राधिकारी के कार्यालय में उपस्थित होकर सीवरेज प्रोजेक्ट के समस्त अभिलेखों का अवलोकन करने के बाद जिन अभिलेखों की प्रतिलिपियां चाहें वह निशुल्क प्राप्त करें। राज्य सूचना आयुक्त डा. जी कृष्णमूर्ति ने नगर निगम के लोक सूचना अधिकारी को आदेश दिया कि वह अपीलार्थी एडवोकेट कपिल मजावदिया को 15 दिन के भीतर समस्त अभिलेखों का अवलोकन करवाएं और अपीलार्थी को जिन अभिलेखों की आड्वश्यकता हों,उन अभिलेखों की सत्यापित प्रतिलिपि उसी दिन निशुल्क

अपीलार्थी को उपलब्ध कराएं।राज्य सूचना आयुक्त के सुस्पष्ट निर्देशों को भी नगर निगम के अधिकारियों पर कोई असर नहीं पडा। एडवोकेट कपिल मजावदिया ने राज्य सूचना आयुक्त के आदेशानुसार नगर निगम कार्यालय में पंहुचकर सम्बन्धित अधिकारियों से सीवरेज प्रोजेक्ट के दस्तावेजों का अवलोकन कराने को कहा,लेकिन नगर निगम के अफसरों ने राज्य सूचना आयुक्त के आदेश को ताक पर रखते हुए श्री मजावदिया को किसी दस्तावेज का अवलोकन नहीं करवाया। इसके बाद अपीलार्थी एडवोकेट कपिल मजावदिया ने अपने अभिभाषक प्रवीण शर्मा के माध्यम से नगर निगम के लोक सूचना अधिकारी को एक लीगल नोटिस भी भिजवाया कि वे कपिल मजावदिया को वांछित दस्तावेजों का अवलोकन करवाए,लेकिन नगर निगम ने इस पर भी कोई कार्यवाही नहीं की। सीवरेज प्रोजेक्ट की गडबडियों और भ्रष्टाचार को लेकर लगातार पूर्व विधायक पारस सकलेचा आरोप लगा रहे हैं।

सीवरेज प्रोजेक्ट की गडबडियों को उजागर करने के अपने अभियान में आखिरकार कपिल मजावदिया ने उच्च न्यायालय का द्वार खटखटाया। नगर निगम द्वारा राज्य सूचना आयोग के आदेश का उल्लंघन किए जाने को लेकर श्री मजावदिया ने इन्दौर उच्च न्यायालय के समक्ष एक याचिका प्रस्तुत की। उच्च न्यायालय इन्दौर खण्डपीठ के न्यायमूर्ति प्रणय वर्मा ने एडवोकेट कपिल मजावदिया की याचिका पर निर्णय सुनाते हुए नगर निगम अधिकारियों को निर्देश दिया है कि वे याचिकाकर्ता कपिल मजावदिया को कार्यालय में बुलाकर उन्हे समस्त दस्तावेजों का अवलोकन करवाएं और उनके द्वारा वांछित दस्तावेजों की सत्यापित प्रतिलिपियां उन्हे निःशुल्क उपलब्ध करवाएं।

सीवरेज प्रोजेक्ट से जुडी जानकारियां हासिल करने के लिए मजावदिया को पांच साल लम्बी कानूनी लडाई लडना पडी। इन्दौर उच्च न्यायालय के आदेश के बाद मजावदिया को हाल के दिनों में नगर निगम अधिकारियों द्वारा टेलीफोन पर सूचित किया गया है कि, वे कार्यालय में आकर दस्तावेजों का अवलोकन कर सकते है। दस्तावेजों के अवलोकन के पश्चात उनके द्वारा वांछित दस्तावेजों की प्रतिलिपियां उन्हे उपलब्ध करा दी जाएगी।

मजावदिया ने बताया कि, पांच साल लम्बी कानूनी लडाई के बाद सीवरेज प्रोजेक्ट के दस्तावेजों तक उनकी पंहुच हो पाई है। वे जल्दी ही इन दस्तावेजों को प्राप्त करने के बाद नगर निगम के अधिकारियों द्वारा सीवरेज प्रोजेक्ट में की गई गडबडियों को जनता के बीच उजागर करेंगे।

शुक्रवार दोपहर में अनकवाड़ी पहुंचेंगे मुख्यमंत्री चौहान

माही की गूंज, खरगोन।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान शुक्रवार दोपहर में खरगोन के अनकवाड़ी पहुचेंगे। वे यहां मुख्यमंत्री लाडली बहना योजना और पेसा एक्ट अंतर्गत जनजागरूकता कार्यक्रम में शामिल होंगे। उनके कार्यक्रम के अनुसार वे दोपहर 1:55 बजे अनकवाड़ी स्थित बनाएं गए हेलीपेड पर उतरेंगे। इसके बाद में यहां कुल 1 घंटा 40 मिनट कार्यक्रम में रहेंगे। वे दोपहर 3:35 बजे भोपाल के लिए हेलीपेड से रवाना होंगे।

कलेक्टर शिवराज सिंह वर्मा के निर्देशानुसार कार्यक्रम की निगरानी और तैयारियों के मद्देनजर एक कंट्रोल रूम बनाया गया है। जिला स्तरीय कंट्रोल रूम ई-दक्ष केन्द्र में स्थापित कर नोडल व सहायक नोडल अधिकारी नियुक्त किए हैं। कंट्रोल रूम के प्रभारी नोडल अधिकारी अपर कलेक्टर केके मालवीय होंगे। वहीं सहायक नोडल अधिकारी खरगोन बीईओ आरके सिंह एवं जनजातीय कार्य विभाग के सहायक संचालक एबी गुप्ता होंगे।

नगर पालिका परिसर बड़वानी में लगेगा रोजगार मेला

माही की गूंज, बड़वानी।

मध्यप्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन एवं रोजगार कार्यालय के संयुक्त तत्वाधान में जिले के बेरोजगारों को विभिन्न प्रायवेट कम्पनियों में रोजगार दिलवाने हेतु रोजगार मेले का आयोजन कर युवाओं को लाभान्वित किया जायेगा।

जिला रोजगार अधिकारी टीएस डूडवे से प्राप्त जानकारी अनुसार यह रोजगार मेला 17 मार्च को प्रातः 11 बजे से सायं 4 बजे तक नगर पालिका कार्यालय परिसर बड़वानी में लगाया जायेगा। इस रोजगार मेले में निजी क्षेत्र की कम्पनियो के प्रतिनिधियो द्वारा सेल्स आफिसर, बीमा सलाहकार, सुरक्षा गार्ड, मशीन आपरेटर के पदो के लिये आवेदको के साक्षात्कार पश्चात चयन की कार्यवाही की जायेगी। साथ ही मराल ओवरसीज प्रायवेट लिमिटेड ग्राम खलबुजुर्ग जिला खरगोन में 200 प्रशिक्षु पदो हेतु महिला आवेदिकाओं की आवश्यकता है। जिनकी शैक्षणिक योग्यता 5वी, 8वी एवं आयु 18 से 24 वर्ष के मध्य होना आवश्यक है। इच्छुक आवेदक नियत स्थान एवं दिनांक को अपने मूल शैक्षणिक प्रमाण पत्र एवं उनकी छायाप्रति, जाति प्रमाण-पत्र, रोजगार पंजीयन कार्ड, आधार कार्ड एवं तीन पासपोर्ट साईज के फोटोग्राफस के साथ उपस्थित होकर लाभ प्राप्त कर सकते है।

एक जिला एक उत्पाद में मिर्च का चुनाव होने के बाद नर्सरी में रौपे की मांग बढ़ी

युवा किसान ने नर्सरी में तैयार की पौध, पड़ोसी राज्यों तक बनी पहचान

माही की गूंज, खरगोन।

कहते है कि, किसी काम को शिद्दत से चाहो तो पूरी कायनात उस कार्य को पूरा करने में जुट जाती है। कुछ ऐसी ही कहानी बड़वाह में सिरलाय के युवा किसान और नर्सरी संचालक जितेंद्र पटेल की है। सब्जी की खेती करने वाले युवा किसान जितेंद्र किसी नर्सरी से सब्जियों की पौध लेकर आये तो उन्हें गुणवत्तापूर्ण और आवश्यकता अनुसार पौध नहीं मिली तो उन्होंने भी किसानों को ऐसे घाटे से बचाने के लिए पूरी लगन और दिल लगाकर नर्सरी की शुरुआत हुई। वर्ष 2011 में 1 हजार वर्ग मीटर के क्षेत्र में नर्सरी बनाकर शुरुआत हुई। आज उनकी नर्सरी 13.50 एकड़ में फैल चुकी है। हालांकि नर्सरी में सब्जी, अर्नामेंट और फलों के भी पौधे तैयार होते है। लेकिन इन दिनों कुछ वर्षों से मिर्च की पौध की मांग बढ़ने से इस पर ज्यादा फोकस होकर काम करने लगे है। जितेंद्र बताते है कि पिछले वर्ष उन्होंने 25 मिर्च की किस्मों के 50 किलो बीज की पौध तैयार की थी। इस बार उन्होंने 75 किलो मिर्च के बीज की पौध की तैयारी की है। उन्होंने करीब 4 वर्षों में 4 से 5 करोड़ मिर्च की पौध तैयार कर बेंची है। उनका कहना है कि एक जिला एक उत्पादन में चिन्हित होने से मिर्च पौध में वृद्धि हुई है। करीब 13 वर्षे में जितेंद्र पटेल ने अपनी नर्सरी को हाइटेक बनाकर अपने व्यावसाय को सिर्फ मप्र में सीमित नही रखा। उनकी नर्सरी की पौध की मांग अब राजस्थान के अलावा गुजरात और महाराष्ट्र में होने लगी है।

हाइटेक नर्सरी बनाने की कोशिश में मिला शासन का सहयोग

जितेंद्र अपनी पूरी लगन के साथ नर्सरी के काम मे बढ़ने लगे तो इसे हाइटेक बनाने की इच्छा जागी। ऐसी स्थिति में शासन से उनको पूरा सहयोग मिला। उद्यानिकी विभाग के उपसंचालक श्री गिरवाल ने बताया कि जितेंद्र को सबसे पहले 2013-14 में उद्यानिकी विभाग की बागवानी मिशन में 4 हजार वर्ग मीटर में 14

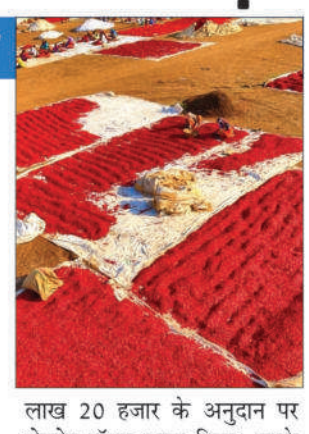

लाख 20 हजार के अनुदान पर शेडनेट हॉउस प्रदान किया। इसके बाद वर्ष 2019-20 में राज्य योजना में उनकी पत्नी और उनके भाई के नाम पर अलग-अलग प्रकरण में कुल 7500 वर्ग मीटर में पॉली हॉउस और शेडनेट हॉउस के लिए 28 लाख 37 हजार 920 रुपये का अनुदान मिला। इसके बाद जितेंद्र ने अपनी नर्सरी को हाइटेक बनाने की दिशा में एक से एक सफल प्रयोग कर एक जिला एक उत्पाद की फसल को बढ़ावा देने में योगदान दे रहे है।

बसंत त्यौहार सबकी सांझी संस्कृति का त्यौहार है- नीरू सिंह ज्ञानी

ढोल धमाकों और पंजाबी पारंपरिक गीतों पर सभी सदस्य थिरके

माही की गूंज, खरगोन।

संस्कृति और विरासत कला, संगीत, नृत्य और उत्सव शरीर, मन, बुद्धि सुखी रहने के लिए जरूरी होते है। गुरु ग्रंथ साहिब जी में विभिन्न रागों में गुरबाणी मन को शांति देती है। यह बात पंजाबी साहित्य अकादमी संस्कृति परिषद की निदेशक नीरू सिंह ज्ञानी द्वारा प्रदेश के सुदूर आदिवासी अँचल खरगोन के झिरन्या एंव बड़वाह में बसंत राग पर केन्द्रित गुरबानी कीर्तन गायन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के समापन अवसर पर मंगलवार को कही। पंजाबी साहित्य अकादमी की निदेशक नीरू सिंह ज्ञानी द्वारा केंद्र में प्रधानमंत्री द्वारा सिख समाज के लिए किए गए कार्यों के बारे में बताया कि, करतारपुर कॉरिडोर खुलने से गुरूनानक देव जी के पावन गुरूद्वारे के खुले दर्शन, गुरु तेग बहादुर जी का 400 वां प्रकाश पर्व का ऐतिहासिक कार्यक्रम लाल किले पर मनाया जाना, वीर बाल दिवस की घोषणा आदि के लिए पूरा समाज कृतज्ञ है। वही पंजाबी साहित्य अकादमी द्वारा मध्यप्रदेश के 6 हजार से भी अधिक विद्यालयों में गुरु गोबिंद जी के साहिबजादों के लासानी शहादत के इतिहास से अवगत कराकर आने वाली पीढी को जागरूक किया गया। अकादमी द्वारा तैयार की गई डॉक्यूमेंट्री प्रदेश और दूर देशों में भी दिखाई गई। लाईट एण्ड साउण्ड, के माध्यम से मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों में श्री गुरूतेग बहादुर जी का 400वां प्रकाश पर्व मनाया गया।

नीरू सिंह ज्ञानी ने बताया कि, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान एवं संस्कृति, आध्यात्म मंत्री उषा ठाकुर द्वारा संस्कृति और विरासत कला, संगीत, नृत्य और उत्सव के लिये किये जा रहे कार्यो की पूरे देश विदेशों में सराहना की जा रही है। अकादमी द्वारा प्रदेश में मां बोली पंजाबी, युवा, नवोदित/नवांकुरित कलाकारों की साहित्यिक प्रतिभाओं को पहचान कर रचनात्मक सृजनशील कलाओं को मंच प्रदान कर प्रोत्साहित करने के लिए अकादमी अथक प्रयासरत है। झिरन्या में सरदार हरदीप सिंह, ईशर के निर्देशन में उनके दल द्वारा दी गई भांगड़ा एवं गायन से झिरन्या में दूर-दराज अँचल से आए लोगों ने प्रस्तुति का आनंद लिया। पंजाब अमृतसर के मूर्धन्य हजूरी रागी जत्था दल के साथ रागी धरमवीर सिंह के निर्देशन में गुरूद्वारा परिसर, बड़वाह में सिख नव वर्ष के अवसर पर आज रागीय गुरबाणी कीर्तन प्रस्तुति से संगत ने परमात्मा की खुशियां प्राप्त की।

इस अवसर पर झिरन्या एवं बड़वाह के कार्यक्रम में पूर्व विधायक धुल सिंह डावर, रविंदर सिंह भाटिया, गुरुसिंह सभा अध्यक्ष बड़वाह, सचिव मनप्रीत सिंह भाटिया, सतविंदर सिंह भाटिया, कोषाध्यक्ष अवतार सिंह, राजपाल सलकर, जसपाल सिंह भाटिया, इकबाल सिंह भाटिया, गुरचरण सिंह भाटिया, गुरु सिंह सभा, पृथ्वी पाल सिंह भिकनगांव, चरणजीत कौर भाटिया, गुड्डू गोस्वामी, ब्रह्माकुमारी आश्रम पंधाना की मुख्य सुरेखा दीदी, नेहा दीदी एवं कल्पना दीदी उपस्थित रहे। इस अवसर पर अकादमी की निदेशक द्वारा किये गये कार्यो की प्रशंसा की और उन्हें समाज के प्रतिनिधियों द्वारा स्मृति चिन्ह शॉल से सम्मानित किया।

जिला पंचायत अध्यक्ष ने किया ग्राम पंचायत वझर का निरीक्षण

माही की गूंज, बड़वानी।

जिला पंचायत अध्यक्ष बलवंत सिंह पटेल ने जनपद पंचायत निवाली क्षैत्र के प्रवास के दौरान ग्राम पंचायत वझर में पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के अन्तर्गत संचालित योजनाओं में चल रहे निर्माण कार्यों का निरीक्षण किया एवं हितग्राहीमूलक योजनाओं में लांभावित किये गये हितग्राहियों की सूची का अवलोकन कर लाभ से वंचित रहे हितग्राहियों के प्रकरणों का निराकरण की कार्यवाही समय - सीमा में संपादित करने व पंचायत के समस्त विकासोन्मुखी कार्य प्राथमिकता से कराने के निर्देश दिए। साथ ही विकास कार्यों को गुणवत्तापूर्ण ढंग से समय सीमा में पूर्ण करने के निर्देश भी संबंधित उपस्थित अधिकारी को दिए।

अवैध खनिज के विरूद्ध हुई कार्रवाई

माही की गूंज, बड़वानी।

जिला खनिज अधिकारी घनश्याम धनगर के निर्देशन में खनिज एवं राजस्व विभाग की संयुक्त टीम ने ग्राम भामटा में अवैध रेत परिवहन करते हुए 6 ट्रेक्टर ट्राली को जप्त कर कलेक्टर कार्यालय बड़वानी की सुरक्षा में खड़ा करवाया है। जिला खनिज अधिकारी घनश्याम धनगर ने अवैध उत्खन्न एवं परिवहन में संलग्न वाहनों के मालिकों को चेतावनी दी है कि खनिज विभाग द्वारा निरंतर कार्यवाही की जा रही है। अतः शासकीय कोष में रायल्टी जमाकर शासन के निर्देशानुसार खनिज का परिवहन करे।

कोटेश्वर में पंडित प्रदीप मिश्रा के मुखारबिंद से होगी पंचपुष्प श्री शिव महापुराण कथा, पांच दिनों तक होगा विभिन्न पुष्पों का वर्णन

माही की गूंज, बदनावर।

कोटेश्वर में जो कथा होने जा रही है उसमें पांडे परिवार की बहुत बड़ी भूमिका रही है। दुख इस बात का है कि आज वह हमारे बीच में नहीं है परंतु उनकी स्मृति में आयोजित इस कथा में उनकी जीवटता हर जगह झलकती है। आज हर जगह नागदा का नाम पांडे परिवार के नाम से जाना व जोड़ा जाता है। पांडे परिवार के कारण हमें यह कथा मिली है और सौभाग्य की बात है कि यह कथा विधानसभा के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल कोटेश्वर में सम्पन्न होने जा रही है। हम सब मिलकर इस कथा को ऐतिहासिक बनाएंगे, 3 वर्षों के भ्रमण में यहां के लोगों की धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा व आस्था देखी है। नारी शक्ति की उपस्थिति बता रही है की शिव पुराण कथा को लेकर इनका उत्साह चरम पर है। उक्त मार्मिक विचार श्री शिव महापुराण कथा आयोजक शरद सिंह सिसोदिया ने नागदा में आम जनमानस को कथा के निमित्त निमंत्रण पत्र वितरण अवसर पर व्यक्त किए।

सोमनाथ गार्डन नागदा में आयोजित बैठक के दौरान आयोजक सिसोदिया एवं पदाधिकारियों का अमन पांडे, संतोष पेंटर, कोहिनूर मंसूरी, प्रीति शुक्ला, मंगला शर्मा, उर्मिला कौशल सहित स्थानीय ग्रामीणों ने पुष्प हार से स्वागत किया। समाजसेवी व पर्यावरण प्रेमी दिनेश रघुवंशी ने कहा कि हमारे क्षेत्र व जिले के लिए गौरव की बात है कि अंतरराष्ट्रीय कथावाचक पंडित मिश्रा की शिव महापुराण कथा हमें रूबरू सुनने को मिलने जा रही है। हम सभी आमजन को सहभागी बनकर आगंतुकों की सेवा लाभ के साथ कथा श्रवण लाभ लेना है।

24 मार्च से 28 मार्च तक कोद के समीप प्रसिद्ध तीर्थ स्थल कोटेश्वर धाम में पांच दिवसीय संगीतमय शिव महापुराण कथा

अंतर्राष्ट्रीय कथा वाचक पंडित प्रदीप मिश्रा के मुखारविंद से संपन्न होना है। कथा में प्रत्येक जनमानस को आमंत्रित करने के निमित्त गांव गांव जाकर आयोजक सिसोदिया एवं समिति पदाधिकारियों द्वारा निमंत्रण पत्र वितरित किए जा रहे हैं। नागदा में सचिन पांडे व रमेश सांखला ने भी अपने विचार व्यक्त किये। संचालन राजेन्द्र जाट ने किया।मंगलवार को करौदा की धाकड़ धर्मशाला, कड़ोद खुर्द के पिपलेश्वर महादेव मंदिर परिसर में बैठक संपन्न हुई। यहां गजेंद्र सिंह बेराडिया, भानु प्रताप सिंह डोडिया, उपसरपंच सत्यनारायण जाट, सुभाष रघुवंशी, सागर सिंह चावड़ा आदि ने स्वागत कर सहयोग प्रदान करने की बात कही।अगली बैठक नीलकंठ महादेव मंदिर गरडावद में संपन्न हुई। यहां विक्रम सिंह पटेल, पंकज पंवार, समरथ सिंह दांगी, राम सिंह मकवाना, परसराम खोंचर मुकेश भाकर आदि ग्रामीणों ने भाग लेकर आयोजन को सफल बनाने का भरोसा दिलाया।यंहा संचालन विनोद गेहलोद बांकुरली ने किया।जानकारी आयोजन समिति के मीडिया प्रभारी गोवर्धन सिंह डोडिया ने दी।

एसडीओपी ने किया कथा स्थल का निरीक्षण

श्री शिव महापुराण कथा आयोजन स्थल की व्यवस्था को लेकर बदनावर एसडीओपी शेर सिंह भूरिया ने अवलोकन किया। विशेषकर पार्किंग व्यवस्था को लेकर चर्चा की व भौगोलिक स्थिति को गहनता से समझा।आयोजन समिति के राजू खोखर चेतन सिंह राठौर भूपेंद्र जाट आदि ने आयोजन की तैयारी व व्यवस्था की वस्तु स्थिति से अवगत कराया।

कोटेश्वर में 2 बजे से 5 बजे तक होगी पंचपुष्प शिव महापुराण कथा

तीर्थ स्थल कोटेश्वर धाम में आगामी 24 से 28 मार्च तक होने वाली पांच दिवसीय शिव महापुराण कथा का समय दोपहर 2 बजे से शाम 5 बजे तक रहेगा। इस कथा का नाम पंडित मिश्रा द्वारा पंचपुष्प नाम दिया गया है।इस पांच दिवसीय कथा में एक एक फूल कोनसे महादेव को कब चढ़ाया जाए, जिससे जिंदगी में कोई बड़ा रोग, टेंशन जीवन भर सम्मुख ना आए, ऐसा कौन सा पुष्प शिव जी

को चढ़ाया जाए जिससे हमारे जीवन में जो दुख आया है वह कट जाए। उस पंचपुष्प को हम समझेंगे हम प्रयास भी करेंगे की कथा के बीच 5 दिन जिन पंचपुष्प को शिव जी को चढ़ाया जाए उन्हें आस्था चैनल के माध्यम से लाइव दर्शन करवाने का प्रयास करेंगे। पंचपुष्पो की जानकारी उपस्थित धर्मालुओं को पंडित मिश्रा द्वारा प्रदान की जाएगी। ख्याति प्राप्त कथावाचक पंडित मिश्रा ने नोएडा में चल रही कथा की व्यास पीठ से बुधवार को एक वीडियो जारी कर बताया की शिवजी के भक्तों द्वारा कौन से पुष्प अर्पित करने से कौन सी बाधा दूर होती है उसके बारे में प्रतिदिन 5 दिवस तक कोटेश्वर की कथा में वर्णन किया जाएगा। यदि बदनावर क्षेत्र में पंचपुष्प अगर प्राप्त हुए तो उन्हें कथा से लाइव आस्था चैनल के माध्यम से दिखाया जाएगा।

शीतला सप्तमी पर पूजा अर्चना हेतु भक्तों की लंबी लगी रही कतारें

माताजी को लगाया ठंडे भोजन की प्रसादी का भोग

माही की गूंज, आम्बुआ।

होलिका त्यौहार के अंतिम दौर में क्षेत्र में शीतला सप्तमी पर्व की धूम रही। सुबह 4 बजे से पूजा हेतु श्रद्धालु जुट गए, पूजा का दौर दोपहर तक चला। दिनभर ठंडे भोजन का घर-घर में कार्यक्रम रखा गया।

फाल्गुन माह की पूर्णिमा को होली दहन के बाद लगभग 7 दिनों तक विभिन्न आयोजन हिंदू सनातन धर्म में चलता रहता है। रंग पंचमी के बाद शीतला सप्तमी त्यौहार का अंतिम दिन कहा जाता है। हालांकि सप्तमी के बाद शीतला अष्टमी, दशामाता स्थापना, नवरात्रि तथा हिंदू नव वर्ष गुड़ी पड़वा का त्यौहार भी आगामी समय में आ रहे हैं। मगर होली के सात दिनों की समाप्ति शीतला सप्तमी के पूजन जिसमें रात को बनाया गया ठंडा भोजन व्यंजन आदि की प्रसादी का भोग शीतला माता को लगाया गया। सुबह लगभग 4 बजे से मंदिर जो कि कस्बे से 2 किलोमीटर दूर ÷वीराने÷ में स्थित है मैं श्रद्धालुओं का आना प्रारंभ हो गया था तथा दोपहर तक लंबी कतार में अपनी बारी का इंतजार कर महिलाओं ने पूजा अर्चना की। प्रजापत समाज की अधिष्ठाती माता शीतला देवी के मंदिर की साज सज्जा समाज जनों ने कराई तथा अन्य व्यवस्था भी संभाली आम्बुआ तथा समीप ग्राम बोरझाड़ के लगभग सभी सनातनी हिंदू परिवारों ने सुख समृद्धि तथा आरोग्यता बनाए रखने की प्रार्थना कर माता की पूजा अर्चना की। मंदिर तक जाने हेतु पैदल दो पहिया तथा चार पहिया साधनों से गए। पुलिस की माकूल व्यवस्था रही।

रंगों का पर्व रंग पंचमी धूमधाम के साथ मनी, रंगारंग गैर में डीजे की धुन पर जमकर नाचे युवा

माही की गूंज, आम्बुआ।

होलिका दहन के बाद धुलैण्डी और उसके बाद रंग पंचमी पर रंग खेलने की परंपरा जोकि विगत वर्ष कोरोना में रुक गई थी, इस वर्ष पुनः रफ्तार पकड़ती नजर आई। सनातन हिंदू सर्व समाज मंच की पहल पर कस्बे में डीजे की धुन पर नाचते युवाओं ने सतरंगी छटा बिखेरी तथा जमकर रंग खेला। महिला मंडल भी पीछे नहीं रहे उन्होंने भी टोली बनाकर रंग खेला।

'रंग बरसे भीगे चुनरवाली' गीत बजे और सुनने वालों के पांव न चले ऐसा हो ही नहीं सकता। रंगों की मस्ती का त्यौहार होली के पांचवे दिन आम्बुआ में सनातन हिंदू सर्व समाज मंच के आह्वान पर एक लंबे अंतराल के बाद कस्बे की गलियों में रंग गुलाल उड़ता नजर आया। डीजे की धुन पर छोटे-बड़े सभी मस्ती में झूमते नजर आए। पंचायत प्रांगण में स्वल्पाहार कर मस्ती में झूमती टोलियां जब गांव में घूमी तो नजारा सतरंगी हो गया। नाचते गाते युवाओं की मस्ती भरी रंगों से सराबोर टोलियां आम्बुआ से होकर समीप ग्राम बोरझाड़ तक गई तथा वहां भी सभी को रंगों से तरबतर कर वापस आम्बुआ आए। जहां घंटों तक नाच गाते तथा रंगों की फुहारो के बाद कार्यक्रम का समापन किया। सनातन सर्व समाज मंच के आह्वान पर लगभग संपूर्ण प्रतिष्ठान कुछ समय के लिए बंद रखे गए। रंगों की मस्ती में महिला समूह भी पीछे नहीं रही उन्होंने भी कस्बे में जमकर रंग खेला विगत वर्ष कोरोना के कारण रंग नहीं खेल पाने की कसर इस बार सभी ने पूरी कर ली।

रंग पंचमी पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने निकाली गैर

आम्बुआ में ग्राम पंचायत सरपंच रमेश रावत, युवा कांग्रेसी महेंद्र सिंह रावत एवं कस्बा कांग्रेस अध्यक्ष हाशिम अली बोहरा के नेतृत्व में एक रंगारंग गैर आश्रम चौराहे से प्रारंभ हुई। डीजे की धुन पर सैकड़ों ग्रामीण युवा कार्यकर्ता नाचते हुए आम्बुआ कस्बे तक आए तथा बाजार में गैर निकालते हुए बस स्टैंड पर जमकर रंग खेला। एक-दूसरे को गुलाल लगाकर रंग पंचमी की बधाई दी। बस स्टैंड के बाद यह गैर पुनः 2 किलोमीटर दूर आश्रम चौराहे तक जाकर धूमधाम से रंग खेल कर समापन किया गया।

पुलिस ने पकड़ी अवैध शराब से भरी आयसर

माही की गूंज, आम्बुआ।

थाना आम्बुआ पुलिस ने अवैध शराब परिवहन को लेकर करवाई की। जिसके परिणाम स्वरूप जोबट की ओर से आ रहे आयॅसर वाहन क्रमांक एमपी 13 जीबी 0902 को ग्राम बोरझाड दरगाह के पास नाकाबंदी कर रोका गया। पुलिस के रोकनें पर उक्त वाहन के चालक व एक अन्य व्यक्ति पुलिस को देखकर गाड़ी से ऊतरकर भागने लगे। जिन्हे नाकाबंदी में लगी पुलिस टीम के द्वारा घेराबंदी कर गिरफ्तार किया गया। पूछताछ करने पर पकड़े गये व्यक्तियों ने अपने नाम अनुप पिता गोरधन बघेल भीलाला (30) निवासी तड़वी फलिया कस्बा जोबट जिला अलीराजपुर व सुरेश पिता सोमला रावत भीलाला (24) निवासी ग्राम अखाड़ा स्कूल फलिया थाना बाग जिला धार के होना बताया। पकड़े गये व्यक्तियो से पुछताछ मे बताया कि आयशर वाहन में अवैध शराब भरी होना बताया। पुलिस टीम के द्वारा घटनास्थल से वाहन को थानें पर लाया गया। जिसमें बडी मात्रा में अलग-अलग कंपनियों की अवैध शराब परिवहन कर गुजरात में सप्लाई करनें की योजना थी।

आबुआ पुलिस के द्वारा दोनों आरोपियों को गिरफतार कर थाना आंबुआ में अपराध क्रमांक अप. क्र. 68/2023, धारा 34(2), 36, 46 आब. एक्ट का दर्ज करते हुये अवैध शराब परिवहन में प्रयुक्त ऑयसर वाहन कीमती 11 लाख रूपयें व अंग्रेजी शराब कुल मात्रा 1032 लीटर, कीमती करीबन 6 लाख 45 हजार रूपये की जप्त की गई।

पुलिस अधीक्षक अलीराजपुर मनोज कुमार सिंह ने बताया कि, अवैध शराब व्यवसाय में लिप्त असामाजिक तत्वों की हर गतिविधि पर लगातार नजर रखी जा रही है। इसी प्रकार अलीराजपुर पुलिस की अवैध शराब व्यवसाय पर कार्रवाई लगातार जारी रहेगी।

मुख्यमंत्री कन्यादान फिर आई चर्चा में

शादी में दहेज देने के बाद अधिकारियों ने सामान लिया वापस

जबलपुर।

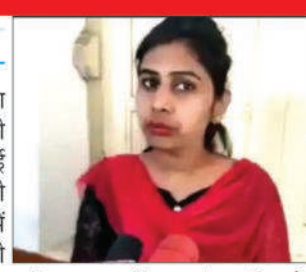

जिले में एक अजब गजब तमाशा देखने को मिला यहां मुख्यमंत्री कन्यादान योजना में पहले शादी कराई गई। इस दौरान दोनों पक्षों को गृहस्थी का सामान भी दिया गया लेकिन बाद में यह कहकर समान वापस ले लिया की वधु की शादी पहले घर पर हो चुकी है। इसलिय समान नही दिया जा सकता। इस मामले को लेकर वधू पक्ष के परिवार वालों ने कलेक्टर से न्याय की गुहार लगाई है। उनका कहना है कि फोन द्वारा मुख्यमंत्री कन्या योजना में नाम आने पर बुलाया गया था और गृहस्थी का सामान वापस लेकर बेज्जती की गई है इस पर कार्रवाई की जाए।

जबलपुर के बरेला स्थित पड़वार में एक परिवार के साथ मुख्यमंत्री कन्यादान सम्मेलन में पहले कन्या का विवाह करा दिया गया और बाकायदा वधु को गृहस्थी का सामान भी दिया गया। उसके बाद दिए गए गृहस्थी के सामान को वापस ले लिया गया, जहा वधु पक्ष के परिजन कलेक्टर से गुहार लगाने पहुँचे और बताया की उनके गांव पड़वार के सरपंच के द्वारा उनकी बेटी का विवाह मुख्यमंत्री कन्यादान में कराने की बात कहकर फॉर्म भर दिया गया।जिसके बाद उनके द्वारा लड़के लड़की की हल्दी का कार्यक्रम और सभी रिवाज घर पर कर दिए गए उसके बाद सरपंच के द्वारा बताया गया की सम्मलेन स्थगित हो गया है जिसके चलते उन्होंने जैसे तैसे अपनी बेटी का विवाह घर से साधारण तौर पर कर दिया। उसके बाद मुख्यमंत्री कन्यादान सम्मलेन से फ़ोन आया की इस दिनांक को आपकी बेटी का विवाह है जिसके बाद वर वधु सम्मलेन में पहुँचे और वहाँ विवाह हुआ जिसपर वाह मौजूद योजना के अधिकारीगण ने गृहस्थी का सामान दिया।

वही किसी के कहने पर की विवाह घर पर पहले हो चुका है जिसके बाद अधिकारियों के द्वारा सबके सामने दिया हुआ सामान वापस ले लिया गया,और सबके सामने बेज्जती की गई जबकि फ़ोन के द्वारा फॉर्म में नाम आने के बाद ही बुलाया गया था, परिजनों ने कार्यवाही की मांग की है।

पीड़ित पक्ष की बड़ी बहन चांदनी मेहरा ने बताया कि, मेरी छोटी बहन की शादी होना फिक्स थी लेकिन बरेला के सरपंच सचिव ने बताया कि सम्मेलन हो रहा है वंहा का फॉर्म डाल दीजिए। तो हम लोगों ने कहा कि हल्दी मंडप घर से कर लेंगे और बाकी की विवाह रीति रिवाज सम्मेलन में कर लेंगे। लेकिन बाद में सरपंच सचिव ने कहा कि सम्मेलन स्थगित हो गया है इस कारण हमने शादी घर में ही कर ली लेकिन पिछले दिन फोन आया कि मुकुंद बड़ा मैं आप लोगों का नाम आया है हम परिवार सहित वहां पर पहुंचे और वहां पर फिर एक बार शादी कराई शादी में फेरे भी हुए और दहेज का समस्त समान दिया गया। लेकिन यह कहते हुए वापस मांग लिया कि पहले शादी हो चुकी है इसमें हमारी क्या गलती है सरपंच ओर सीईओ के द्वारा ही फोन लगाकर बुलाया गया था। और शादी भी कराई लेकिन सामान वापस लेने पर हमारी एक प्रकार से बेज्जती हुई है इसलिए कलेक्टर साहब से इन पर कार्रवाई की मांग की है।

उत्साहपूर्वक मनाया शीतला सप्तमी का पर्व

माही की गूंज, अमझेरा (धार)। अमझेरा में शीतला सप्तमी का पर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया। जिसके तहत महिलाओं के द्वारा अलसुबह से ही नगर के विभिन्न थानकों पर जाकर माता का पूजन कर ठंडे पकवानों का भोग लगाया गया। मांगोद-मनावर मार्ग पर स्थित मुख्य थानक पर माता पूजन के लिए महिलाओं की भारी भीड़ देखी गई। वहीं नानाघाट, तंबोली मोहल्ला, थाना परिसर आदि स्थानों पर पूजन कर घर पर हल्दी-कुमकुम के छापे लगाकर परिवार के सुख-समृद्धि की कामना की गई।

होली महोत्सव पर निकली विशाल फाग यात्रा

माही की गूंज, जोबट।

शीतला सप्तमी का पर्व बड़े हर्ष और उल्लास के साथ जोबट नगर में मनाया गया। शीतला सप्तमी पर सर्व हिंदू समाज द्वारा शिवाले प्रांगण से डीजे के साथ विशाल फाग यात्रा निकाली गई। जिसमें हजारों लोग शामिल रहे। सर्व हिंदू समाज द्वारा निकली फाग यात्रा नगर के प्रमुख मार्गो से होकर गुजरी। जहां एक और युवाओं की टोलियां डीजे पर होली खेलते हुए थिरकते नजर आए। तो वहीं दूसरी ओर पुरुष महिलाएं बच्चों ने भी रंग में सरोवर होकर रंगारंग पर्व का आनंद लेने में कोई कसर नहीं छोड़ी। लोगों में फाग यात्रा को लेकर काफी उत्साह दिखाई दिया। फाग यात्रा में इतना रंग गुलाल उड़ा नगर की सड़कें भी रंगीन दिखाई दी। फाग यात्रा कृष्ण मंदिर चौराहे पर आते हैं फायर ब्रिगेड से पानी की वर्षा भी की गई। पानी की बौछार ओं के साथ युवा डीजे पर बजते हुए गानों पर जमकर थिरकते नजर आए।

जीत कर भी हार गई जिंदगी...

बोरवेल में गिरे बच्चे ने रेस्क्यू के बाद अस्पताल में तोड़ा दम

विदिशा।

विदिशा में 60 फीट गहरे बोरवेल में गिरे बच्चे लोकेश की मौत हो गई। लोकेश मंगलवार को बोरवेल में गिर गया था। बुधवार को करीब 24 घंटे बाद उसे निकाला गया। इसके बाद उसे अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। लोकेश के रेस्क्यू में एसडीआरएफ की 3 और एनडीआरएफ की 1 टीम जुटी थी। बच्चे को ऑक्सीजन भी सप्लाई की गई थी। लेकिन उसकी जान नहीं बच सकी।

घटना लटेरी तहसील के आनंदपुर गांव की है। गांव के खेरखेड़ी पठार के पास एक खेत बोरवेल खुला पड़ा था। जिसमें आठ वर्ष का लोकेश गिर गया। लोकेश अपने माता पिता के साथ खेत में गया था और खेल रहा था और खेलते खेलते बोरवेल में गिर गया था।

इसके बाद मजदूरों ने पुलिस को सूचना दी। सूचना के बाद एसडीएम हर्षिल चौधरी सहित अन्य प्रशासनिक अमला मौके पर पहुंच गया और बचाव का काम शुरू किया। स्थानीय लोगों का कहना है कि, जिस जगह बोरवेल हैं वहां पर धनिया की खेती की गई है इसकी वजह से दिखाई नहीं दिया और लोकेश उसमें गिर गया।

इसके बाद एनडीआरएफ की 1 और एसडीआरएफ की 3 टीमों ने मौके पर पहुंचकर रेस्क्यू अभियान का जिम्मा संभाला। बच्चा 43 फीट गहराई में फंसा था। विदिशा पुलिस अनुसार, बोरवेल के पास 49 फीट गहरा गड्ढा खोदा गया था। इस दौरान बच्चे के मूवमेंट को नोटिस किया गया। उसे ऑक्सीजन सप्लाई की गई थी। बोरवेल में जहां बच्चा फंसा था, उस तक वेब कैमरे भी पहुंचाए गए थे।

पुलिस के मुताबिक, बोरबेल और 49 फीट गहरे गड्ढे के बीच टनल बनाई गई। इससे ही बच्चे तक बचावकर्मी पहुंचे और उसे बाहर निकाला गया। इसके बाद उसे अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

गधे पर बैठ युवक पहुंचा कलेक्ट्रेट, चांदी की प्लेट में खिलाए काजू

छतरपुर।

जिले में जनसुनवाई के दौरान एक अजीबोगरीब मामला सामने आया है। एक शख्स गधे पर सवार होकर जनसुनवाई में अपनी समस्या के लिए आवेदन देने पहुंच गया। अधिकारियों के पास जाने के पहले युवक ने गधे को माला पहनाई और उसे चांदी की प्लेट में काजू खिलाया।

आवेदन देने गए मनोज अग्रवाल ने मीडिया से बात करते हुए बताया कि, चांदी की प्लेट में कौन काजू किशमिश खाते हैं, यह किसी से छुपा नहीं है। भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारी होते हैं, वह चांदी की प्लेट में काजू-किशमिश खाते हैं। इसलिए हमने भी गधे को काजू खिलाए हैं और गधे को माला पहनाया है।

मनोज आगे बताया कि, यह अनोखा प्रदर्शन इसलिए किया क्योंकि मैं कई बार भ्रष्ट अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए ज्ञापन दे चुका हूं। मगर, मेरी बात किसी ने नहीं सुनी। इसलिए मैं इस बार गधे को काजू खिलाकर और उसे माला पहनाकर गधे पर ही सवार होकर जनसुनवाई में आवेदन देने आया हूं।

शायद अब अधिकारियों को आ जाए शर्म...

प्रदर्शनकारी युवक का यह भी कहना है कि, अधिकारियों के भ्रष्टाचार के लिए पहले भी यहां प्रदर्शन किया था। उनकी समस्या यह है कि, जमीन को लेकर कई बार उन्होंने आवेदन दिए हैं। उनकी जमीन की नाप की जाए, लेकिन वह नहीं की जा रही है। इसलिए प्रदर्शन करते हुए कलेक्टर को ज्ञापन देना पड़ा है। शायद इस शर्म के मारे ही अधिकारी मेरी समस्या का समाधान करें।

बहरहाल, मनोज की समस्या का समाधान होगा या नहीं होगा, यह तो समय ही बताएगा। मगर, इस अनोखे प्रदर्शन की वजह से उनका मामला जरूर सुर्खियों में आ गया है। अब इस प्रदर्शन की चर्चा भी हो रही है।

जन सहयोग से आबाद हुए हाथीपावा को प्रशासन ने कर दिया बर्बाद

25 फरवरी को मुख्यमंत्री के आगमन के लिए बनाए गए हेलीपेड के लिए चढ़ा दी बली

मनोरंजन के लिए लगे झूले चकरियों को जेसीबी से उखाड़कर फेका कबाड़ में

हाथीपावा का मुख्य द्वार जिसके खुलने और बंद होने का अब कोई निश्चित समय नहीं है।

वन विभाग के द्वारा पूर्व में लगाए गए परिचय बोर्ड अब खुद को मुंह चिढ़ा रहे है।

यहां लगे जुर्माने के बोर्ड का भी अब कोई औचित्य नजर नहीं आता।

माही की गूंज, संजय भटेवरा

झाबुआ। बर्बाद गुलिस्तां करने को बस एक ही उल्लू काफी था। हर शाख पे उल्लू बैठा है अंजामे गुलिस्तां क्या होगा।। शौक बहराइची का यह शेर जिला प्रशासन और उसके कारिन्दों पर बिल्कुल सटीक साबित हो रहा है। अकुशल नेतृत्व और अदुरदर्शिता से ओत -प्रोत जिले का सरकारी तंत्र कई ऐसे कारनामों को अंजाम दे जाता है, जिससे कुछ अच्छा होने की बजाय बहुत कुछ बुरा या गलत ही हो जाता है। इसलिए शौक बहराइची का यह शेर जिले की प्रशासनिक कार्यप्रणाली पर प्रश्न चिन्ह लगाता नजर आ रहा है। जिले के आला अधिकारियों का तो क्या ही कहना जो अपनी अदुरदर्शिता के चलते कई ऐसे कार्यों को अंजाम दे रहे है, जो जिले को लगातार गर्त में धकेल रहे है। क्योंकि जिले में ये ही अधिकारी सर्वशक्तिशाली और सर्वशक्तिमान है, तो किसी की हिम्मत भी नहीं कि इन्हे कुछ कहा-सुना या बताया जाए। इसलिए जिले के अधिनस्त अधिकारी भी आका के हुक्मको इस तरह बजा लाते कि, ''आप जो कहें वही अटल बाकी सब रटल''। मतलब सीधा सा है उल्लुओं के सरदार का हुक्म तमाम उल्लुओं के लिए सिर आंखों पर होता है, चाहे वह गुलिस्तां को बर्बाद करने के लिए ही क्यों न हो। ऐसे कई उदाहरण है जो इस कहावत को जिले की प्रशासनिक कार्यप्रणाली पर सच साबित कर देंगे। मगर हाथीपावा को बर्बाद करने का मामला कुछ ऐसा हो गया है जिसने आमजन व जिला मुख्यालय के रहवासियों पर कुठाराघात किया है। जनसहयोग से आबाद हुई हाथीपावा की पहाडियों को इन उल्लुओं ने बर्बाद करने का कुतसित प्रयास किया है। मगर अभी आमजन की गुहार जिला प्रशासन से लगातार यही है कि, हाथीपावा को जिस तरह अधिकारियों ने बर्बाद किया है उसे उसी तरह वापस बहाल कर दिया जाए। जिला प्रशासन में बैठे उल्लुओं से मान-मनोवल करते हुए लगभग एक पखवाड़ा बीत चुका है, लेकिन अब तक किसी तरह का कोई असर होता दिखाई नहीं दे रहा है।

मामला कुछ ऐसा था कि, जिला मुख्यालय पर 25 और 26 फरवरी को शिवगंगा द्वारा हमला कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। मगर शिवगंगा के इस आयोजन पर उल्लुओं ने हमला बोल दिया। हलमा पर हुए इस हमले ने कार्यक्रम का तखता पलट कर दिया और शिवगंगा का यह आयोजन सरकारी आयोजन बन गया। हाईजैक हुए इस हलमा को विकाय यात्रा का समापन समारोह बना दिया गया। जिसमें मध्यप्रदेश के राज्यपाल मंगुभाई पटेल भी शिरकत करने पहुंचे। दूसरे दिन मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान भी हमला उर्फ विकास यात्रा समापन में शिरकत करने पहुंचे। प्रशासन ने दोनों ही अतिथियों के लिए उल्लु बनकर दो अलग-अलग हेलीपेड बनवाए। जबकि दोनों ही अतिथि अलग-अलग समय में यहां पहुंचे थे। राज्यपाल के जाने के बाद मुख्यमंत्री का आगमन हुआ था। अगर प्रशासन चाहता तो एक ही हेलीपेड से काम हो सकता था लेकिन उल्लुओं की फौज ने दो अलग-अलग हेलीपेड बनाए। इसी अदुरदर्शिता के चलते मुख्यमंत्री के लिए एक हेलीपेड हाथीपावा पर्यटन स्थल पर लगे झूले-चकरियों को उजाड़कर बनाया गया। प्रशासन ने बिना कुछ सोचे-समझे हाथीपावा पर लगे झूले-चकरियों को जेसीबी से उखाड़कर कबाड़ में फेंक दिया। ऐसा नहीं है कि, जिस जगह मुख्यमंत्री को हलमा में शिरकत करने के लिए महज कुछ गेतियां चलानी थी उस जगह के आसपास कहीं हेलीपेड नहीं बनाया जा सकता था या राज्यपाल के लिए बनाए गए हेलीपैड का उपयोग नहीं किया जा सकता था। मगर प्रशासनिक उल्लुओं को तो गुलिस्तां बर्बाद करना था, सो कर दिया।

झाबुआ का स्वर्ग हाथीपावा अब नर्क में तब्दील होता जा रहा है। इस नक्शे से प्रशासन ने झूले चकरियों को हटा दिया है।

इस तरह प्रशासन ने उजाड़ दिया छांव के लिए लगा टीन शेड।

शराब के साथ मांसाहार की पार्टियां भी होने लगी है हाथीपावा पर।

इस तरह नसेडियों ने शराब पीकर फैला रखा है कूड़ा।

जिले में नए आए आला अधिकारियों को शायद हाथीपावा के आबाद होने और पर्यटन स्थल बनने की कहानी मालूम नहीं थी। मगर उनके दुमछल्ले अधिनस्तों को तो शायद वह सारा माजरा याद ही होगा। हाथीपावा जैसी विरान पहाड़ी को आबाद करने का बीड़ा जिले में आए एक सिरफिरे पर्यावरण प्रेमी अधिकारी ने उठाया था। उस अधिकारी ने जिला मुख्यालय की जनता में पर्यावरण के प्रति एक जबरदस्त अलख जगाया था। कई सालों में कड़े परिश्रम और बहुत बड़े जन सहयोग से हाथीपावा इस रूप में आई है। इस हाथीपावा को हरा-भरा करने और पर्यटन स्थल बनाने में हजारों लोगों ने अपने सिर का पसीना एड़ियों तक बहाया था। कई सालों की मेहनत ने इस पहाड़ी को आबाद किया। अब जिले में आए नए अधिकारियों ने अपनी घुटने वाली अक्कल लगाकर इसे बर्बादी की ओर धकेल दिया। हाथीपावा जिला मुख्यालय का एक मात्र ऐसा पर्यटन स्थल है जो जनसहयोग से तैयार हुआ है। वरना जिला मुख्यालय पर प्रशासन या सरकार की ऐसी कोई उपलब्धी दूर-दूर तक नजर नहीं आती। एक उदाहरण यह भी है कि, जब आप अपनी मेहनत से एक पौधे को सींच कर वृक्ष बनाते है और कोई कहीं से आकर उसे काट कर ले जाता है, तो आपकी मनो स्थिति क्या होगी...? बस इतना भर प्रशासन अगर समझले तो यह अंदाजा हो जाएगा कि, आमजन में प्रशासन की इस हरकत पर कितना घुस्सा और आक्रोश है। मगर एक पखवाड़े से ज्यादा का समय बीत चुका है और गुलिस्तां को बर्बाद करने वाले सिर्फ आश्वासनों का झुनझुना ही पकड़ा रहे है। कहीं ऐसा न हो कि यह जन आक्रोश किसी दिन प्रशासन की दहलीज पर हल्ला बोलता नजर आ जाए।

हाथीपावा पर प्रशासन द्वारा की गई बर्बादी के मंजर देखने में कुछ ऐसे है कि, हृदय टूट सा जाता है। जन सहयोग से बच्चों के लिए लगाए गए झूले तितर-बितर कर दिए गए। झूले-चकरियों पर इस तरह जेसीबी चलाई गई कि, वह अब दौबारा ठीक भी नहीं हो सकते। जब प्रशासन की यह कारस्तानी मीडिया के जरिए सुर्खियों में आई तो प्रशासन ने बचकानी हरकत करते हुए वहां पड़े टूटे हुए मनोरंजन के साधनों को गायब ही करवा दिया। कई झूलों को वहीं आसपास पहाड़ियों के गड्ढों में फैंक दिया गया। बैठने की बैंचों को क्षतिग्रस्त कर दिया गया। जो बैंचे हेलीपैड से काफी दूर थी उन्हे भी उलट-पुलट कर क्षतिग्रस्त कर दिया गया। छांव के लिए लगाया गया टीन शेड भी तोड़ दिया गया। टीन शेड की तोड़ी हुई सामग्री को वहीं पास में लावारिस छोड़ दिया गया। अब जो झूले-चकरियों के टूट-फूट के अवशेष बचे है उन पर भी चोर उचक्कों की निगाहें है। वह भी थोड़े ही दिनों में गायब हो जाएंगे। इस सारे कारनामें को जिला प्रशासन ने खुद अपने हाथों से अंजाम दिया है। हाथीपावा पर हुई इस बर्बादी का सीधे तौर पर स्पष्ट रूप से जिला प्रशासन ही जिम्मेदार है। जिसने जनसहयोग से मिली लाखों रुपये की सामग्री और परिश्रम को महज एक हेलीपेड के लिए बर्बाद कर दिया।

अगर अब आमजन अपने परिवार व बच्चों के साथ सेर सपाटा करने हाथीपावा जाना चाहते है तो छोड़ ही दीजिए। क्योंकि अब हाथीपावा पर आपके व आपके परिजनों के मनोरंजन के लिए कुछ नहीं बचा। यहां तक कि, आपको यहां दो पल बैठने के लिए छांव भी नसीब नहीं होगी। जिस गुलिस्तां को आपने अपने पसीने और परीश्रम से सींचा था वह प्रशासनिक उल्लुओं ने बर्बाद कर दिया है। अब यह जगह विरान हो चुकी है। नशेड़ी यहां नशा करने आते है। अमानवीय कृत्य को अंजाम देने यहां कई आवारा तत्व पहुंच रहे है। शराब की खाली बोतले इस बात की चीख-चीखकर गवाही दे रही है। वन विभाग भी इसे अब भूल सा गया है। जगह-जगह टूट-फूट नजर आ रही है। कोई देखने वाला भी नहीं है। अब यह जगह आपके और आपके परिवार के लिए सुरक्षित तो बिल्कुल भी नहीं है।

जनसहयोग से लगाई गई कुर्सियां भी प्रशासन ने यहां साबूत नहीं छोड़ी। कुर्सियों पर लिखे है दान-दाताओं के नाम।

जहां-तहां फिकते फिर रहे है झूल-चकरियों के अवशेष

प्रशासन द्वारा उखाड़ कर फैंके गए झूलों के अवशेष इस तरह आसपास के गड्ढों में पड़े है।

क्या परिवार विशेष के कब्जे में चला गया सिविल हॉस्पिटल...

सिविल हॉस्पिटल के डॉक्टर लिख रहे बाहर के मेडिकल से लाने के लिए दवाई, सीएम हेल्पलाइन पर हुई शिकायत

जिला टीकाकरण अधिकारी को बना दिया बीएमओ, बिगड़ रही व्यवस्था

माही की गूंज, पेटलावद।

सरकार ने करोड़ो की लागत से क्षेत्र में सिविल हॉस्पिटल की बड़ी सौगात दी। मंशा थी, ग्रामीण लोगो को अच्छी और फ्री स्वास्थ्य सुविधाये मोहिया होगी, लेकिन सरकार की मंशा के विपरीत सिविल हॉस्पिटल अनधिकृत रूप से निजी ठेके में चला गया ऐसा प्रतीत होता है। जिसके चलते यहाँ मरीज को सोने की जगह तो मिल जाती है, लेकिन सरकार द्वारा दी जाने वाली दवाएं भरी होने के बाद भी निजी मेडिकलो से खरीदने पर मजबूर होना पड़ता है। दूसरी ओर हॉस्पिटल के स्टाफ में एक ऐसा सिंडिकेट भी काम कर रहा है जो मरीज़ों को इलाज के लिए निजी हॉस्पिटल का रुख करवाने पर मजबूर कर देता है। सिविल हॉस्पिटल से निकलने वाली पर्ची ओर मरीज पर डॉक्टर और स्टाफ का कमीशन फिक्स होता है जो समय-समय पर मिल जाता है। दिन में तो दिन में लेकिन रात्रि ड्यूटी के दौरान भी डॉक्टर हॉस्पिटल से गायब हो जाते है, जिससे भटकता मरीज का परिजन डॉक्टर का इंतजार करने की बजाए निजी हॉस्पिटल या क्लिनिक की ओर रुख कर लेता है।

मामला पेटलावद सिविल हॉस्पिटल का जहा बच्चे के इलाज के लिए पहले तो रात में डॉक्टर के लिए परेशान होना पड़ा। जैसे-तैसे डॉक्टर आया तो मरीज को मिलने वाली दवाई, बॉटल के लिए देर रात में परेशान होना पड़ा। 6 मार्च की रात लगभग साढे 11 बजे ग्राम झोसर निवासी अमरसिंह बीमार पुत्री संजना को लेकर इलाज के लिए सिविल हॉस्पिटल में पहुँचे थे, लेकिन रात में कोई डॉक्टर हॉस्पिटल में मौजूद नही था। मरीज के पिता ने इस बात की सूचना बीएमओ राहुल गणावा को दी जिसके बाद लगभग आधे घंटे बाद डॉक्टर प्रवीण रेवर आये और बच्ची का इलाज किया।

मरीज को देखने के बाद लिखी दवाई ओर बोतल बहार मेडिकल से खरीदने को कहा

बीमार बालिका को देखने के बाद डॉक्टर प्रवीण रेवर ने स्लिप पर दवाई ओर बोतल लिख कर दी। जिस पर बच्ची के परिजन ने दवाई हॉस्पिटल में उपलब्ध होने की बात कही, तो डॉक्टर ने कहा कि, हम यहां से किसी को दवाई नही देते सबको बहार से ही लाने का बोलते हैं, चुकी बच्ची के परिजन को हॉस्पिटल से दवाई मिलने की जानकारी थी इसलिए इसकी शिकायत सीएम हेल्पलाइन पर की गई जिसका शिकायत क्रमांक 212917777 मिला। शिकायत के बाद शिकायतकर्ता को बीएमओ द्वारा शिकायत बन्द करने के लिए दबाव बनाया जा रहा है इतना नही डॉक्टर से गलती से हो गया बोल रहा दूसरे दिन हॉस्पिटल से फिर से दवाई मरीज के लिए दी गई। जबकि रात में दवाई नही होने के बात कही गई और अगले ही दिन दवाई हॉस्पिटल से दी गई।

जिला टीकाकरण अधिकारी को दिया बीएमओ का चार्ज, बिगड़ी व्यवस्था

विगत दिनों सरकार ने ब्लाक मेडिकल अधिकारीयो में हेर-फेर किया। पेटलावद विकास खण्ड में एमएल चोपड़ा को अलीराजपुर जिले के लिए ट्रांसफर कर जिले में जिला टीकाकरण अधिकारी राहुल गणावा को पेटलावद बीएमओ का अतिरिक्त प्रभार दे दिया जो ज्यादातर समय जिले में व्यस्त होकर पूरे जिले के टीकाकरण विभाग को सभालते है। नए बीएमओ के आने के बाद से सिविल हॉस्पिटल की व्यवस्था ज्यादा बिगड़ गई, जो हफ्ते में एक या दो बार ही ड्यूटी पर आते हैं। इस विषय मे सीएचएमओ जयपाल ठाकुर ने बताया कि, हॉस्पिटल में लगभग दवाइयां उपलब्ध है और बीएमओ जिले में भी कार्य देखते हैं इसलिए परेशानी हो रही होगी।

सिविल हॉस्पिटल में एक ही परिवार के चार डॉक्टर काम कर रहे है, जो वर्षो से पेटलावद में जमे हुए ओर खुद का निजी हॉस्पिटल संचालित कर रहे हैं। बताया जा रहा है, हॉस्पिटल से न केवल डॉक्टर ओपीडी से दवाई उपलब्ध करवाने की जगह मेडिकल से दवाई मंगवाई जाती है उसी तरह कई बार मरीजों को इलाज के साथ-साथ निजी हॉस्पिटल पर इलाज के लिए बोला जाता है। कई बार शिकायते होने के बाद भी कोई कार्रवाई नही होती है, ऐसा लगता है हॉस्पिटल को सरकार या स्वास्थ्य विभाग नही कोई सिंडिकेट संचालित कर रहा है, जो मेडिकल से लेकर इलाज के लिए निजी हॉस्पिटल और प्राइवेट मेडिकलो पर मरीज़ों को भेज रहा है।

भाजपा की सरकार, पुलिस का संरक्षण और भाजपाई ही बेच रहे अवैध शराब

माही की गूंज, खवासा।

रीति, नीति और अपने आपको चाल-चरित्र वाली कहने वाली भाजपा की रीति-निती व उसकी चाल व चरित्रता ऐसी की वह सिर्फ लोगों को लुभाने व गुमराह करने के लिए मंचों पर कहती मात्र है, लेकिन असल में नहीं कोई भाजपा की रीति नीति है और नहीं चाल व चरित्र... हम बात एक छोटे से मुद्दे व एक छोटे से गांव की ही करें तो यहां पर ही देखने को मिल जाएगा कि, सरकार की कथनी व करनी व चरित्रता कैसी है।

उमा भारती के विरोध के बाद आगामी चुनाव में लाभ प्राप्त करने के लिए शिवराज सरकार ने प्रदेश में 2611 आहतें जो अधिकांश शहरी स्तर पर शराब दुकान के साथ पास में बैठक व्यवस्था के साथ शराब पीने का अड्डा आहते के रूप में स्थापित थे। जिसे एक अप्रैल से बंद करने के निर्देश दिए। इसके पूर्व नशा मुक्ति अभियान भी शिवराज सरकार ने चलवाया। वही नई आबकारी नीति के तहत स्कूल, मंदिर, मुक्तिधाम, कब्रिस्तान या कोई भी धार्मिक स्थान हो उससे शासकीय शराब दुकान की दूरी 50 मीटर से 100 मीटर की दूरी पर होना तय किया। लेकिन आज एक उदाहरण के रूप में ही प्रदेश या जिले की नहीं सिर्फ खवासा की ही बात करें तो खवासा में कहने को तो सिर्फ दो कंपोजिट शराब की दुकान है। चूंकि यहां दो कंपोजिट शराब दुकान के अलावा शासकीय रूप से कोई आहता नहीं था। लेकिन दोनों कंपोजिट दुकान के अलावा खवासा चौकी क्षेत्र में करीब 50 गांवों में 200 से अधिक अवैध शराब के अड्डे उर्फ आहते संचालित हो रहे हैं। वहीं भाजपा सरकार में अधिकतर भाजपाई समर्थक ही शराब के अवैध अड्डे संचालित कर रहे हैं।

बात करें खवासा की तो खवासा चौकी परिसर के साथ बामनिया मार्ग पर दरगाह, स्कूल, कब्रिस्तान इसी प्रकार बाजना मार्ग पर स्कूल, मुक्तिधाम, मंदिर के 100 मीटर के दायरे के अंदर ही शासकीय दुकान ही नहीं वरन अवैध शराब के अड्डे उर्फ आहते भी संचालित हो रहे हैं। वहीं भाजपा की चरित्रता व उसकी कथनी व करनी की बात करें तो खवासा भाजपा मंडल का उपाध्यक्ष, पूर्व उपसरपंच व उपसरपंच पति तथा वर्तमान में वार्ड क्रमांक 3 का पंच कमलेश उर्फ कांतिलाल भटेवरा चौकी परिसर के साथ कब्रिस्तान, तेजाजी मंदिर व शा. प्रा. शाला के सामने 100 मीटर के दायरे में ही अवैध शराब का अड्डा संचालित कर रहा है। वहीं इसी मार्ग पर शनिराज होटल के साथ पुलिस चौकी परिसर के पीछे भी अवैध शराब के अड्डे संचालित हो रहे हैं। इतना ही नहीं बामनिया मार्ग पर शा. प्रा. शाला से लेकर कन्या व बालक हायर सेकेंडरी स्कूल भी है और इसी मार्ग पर प्रतिदिन सैकड़ों बच्चे इन शराब के अवैध अड्डों के सामने से होकर गुजरते हैं और नशा मुक्ति का ढकोसला करने वाली भाजपा सरकार व शराब माफिया को संरक्षण देने वाली स्थानीय पुलिस को कोसते हुए नजर आते है।

इतना ही नहीं थांदला मार्ग पर भी शनीराज होटल पर अवैध शराब का अड्डा संचालित है। वही बाजना मार्ग पर शंभूलाल चौहान व कीर्ति गेहलोत मिशन स्कूल के समीप तो मुक्तिधाम के समीप भी अवैध शराब के अड्डे संचालित हो रहे हैं। तो वही बाजना रोड पर स्थित दोनों शासकीय कंपोजिट शराब दुकान भी मंदिर व स्कूल के लगभग 100 मीटर के दायरे के अंदर ही संचालित हो रही है। यानी की खवासा की ही बात करें तो विदेशी शराब दुकान के 8 से 10 अड्डे आहतें के रूप में संचालित हो रहे है तो वही इतनी ही देशी कच्ची शराब की दुकान भी अवैध रूप से संचालित हो रही है।

देखा जा सकता है कि, खवासा में ही भाजपा का मंडल उपाध्यक्ष व भाजपा समर्थक शराब के अवैध अड्डे पुलिस की संरक्षण के साथ ही संचालित कर रहे हैं। तय है जिले व प्रदेश की स्थिति क्या है...? वहीं भाजपा सरकार चुनावी लाभ लेने के लिए नशा मुक्ति का ढकोसला करने के साथ 2611 आते बंद कर प्रदेश में शांति व्यवस्था व कानून व्यवस्था की दुहाई दे रही है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422